दैनिक पंचांग
सूर्योदयः 05:27 ए एम
सूर्यास्तः 07:09 पी एम
तिथिः चतुर्थी - 12:57 ए एम, मई 24 तक
नक्षत्रः आर्द्रा - 12:39 पी एम तक
योगः शूल - 04:47 पी एम तक
करणः वणिज - 12:04 पी एम तक
द्वितीय करणः विष्टि - 12:57 ए एम, मई 24 तक
पक्षः शुक्ल पक्ष
वारः शुक्रवार

हिन्दी दैनिक

झारखण्ड देखो

खबरें, कहानी, लोग और बहुत कुछ

Digital Edition

www.jharkhanddekho.com • वर्ष 03 • अंक 188 • पृष्ठ 8 • दुमका, शुक्रवार 07 जुलाई 2023 • मूल्य 2 रुपये Email - Jharkhanddekho@gmail.com | epaper - Jharkhanddekho.com

सीधी में हैवानियत के शिकार का राजकीय सम्मान

शिवराज सिंह ने धोए पैर, तिलक लगाया और मांगी माफी

भोपाल/एजेंसी।

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने वीरवार को सीधी कांड के पीड़ित युवक के न केवल पैर धोए, बल्कि उनसे पूरी घटना के लिए माफी भी मांगी। इसके पहले सीधी कांड के पीड़ित युवक दशमत रावत अपने परिजन के साथ यहां स्थित मुख्यमंत्री निवास पहुंचे। इस दौरान चौहान ने सबसे पहले उन्हें सम्मान से बैठाया, उनके पैर धोए, उन्हें टीका लगाया और माला पहनाई।

इसके बाद चौहान ने शॉल और श्रीफल से उनका सम्मान किया और उन्हें फल भेंट किए। इसके बाद चौहान ने उन्हें पास बैठाकर उनसे उनके परिवार के बारे में पूरी जानकारी ली। उन्होंने उनसे उनकी आजीविका के बारे में भी पूछा। चौहान ने रावत से पूछा कि उन्हें किसी प्रकार की कोई परेशानी तो नहीं है। उनके बारे में जानकारी लेने के बाद चौहान अपने साथ नाश्ता कराने भी लेकर गए। मुख्यमंत्री ने दशमत से उनके कामकाज के बारे में पूछा. उन्होंने दशमत से पूछा, क्या करते हो, घर चलाने के क्या साधन है. सरकार की कौन- कौन सी योजनाओं का लाभ मिल रहा है. बेटी लाड़ली लक्ष्मी है, क्या पत्नी को लाड़ली बहना का लाभ मिल रहा है. शिवराज ने दशमत से पूछा क्या आवास योजना का लाभ मिला है. उन्होंने पीड़ित को कहा बेटी को पढ़ाना है, बेटियां आगे बढ़ रही है. शिवराज सिंह ने दशमत से मुलाकात के दौरान कई विषयों पर चर्चा की. उन्होंने

अंतरिक्ष में ले जाने वाले रॉकेट पर सवार हुआ चंद्रयान-3

नई दिल्ली/एजेंसी।

चंद्रयान-3 की लॉन्चिग की तारीख नजदीक आ गई है। 13 जुलाई को दोपहर ढाई बजे इसे लॉन्च किया जाना है। इस लॉन्चिग की तैयारी के दौरान भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने चंद्रयान-3 को उसे अंतरिक्ष में ले जाने वाले रॉकेट से जोड़ दिया है। श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र में पेलोड फेयरिंग को जियोसिंक्रोनस लॉन्च व्हीकल जीएसएलवी एमके के साथ जोड़ दिया गया।

चंद्रयान-3 मिशन, 13 जुलाई को लॉन्च होने वाला है। यह पृथ्वी के एकमात्र प्राकृतिक उपग्रह चंद्रमा के भूविज्ञान का पता लगाएगा। 3900 किलोग्राम के अंतरिक्ष यान को पहले यूआर राव सैटेलाइट सेंटर में रॉकेट के पेलोड फेयरिंग यानी उपरी हिस्से में डाला गया और फिर इसे रॉकेट के नीचले हिस्से से जोडने् के लिए ले जाया गया। ये हिस्सा इसे पृथ्वी की कक्षा के बाहर धकेल देगा और इसे पृथ्वी से लगभग 3,84,000 किलोमीटर दूर चंद्रमा की ओर ले जाएगा।

इसरो प्रमुख एस सोमनाथ ने हाल ही में घोषणा की थी, 'हम चंद्रमा पर सॉफ्ट लैंडिंग करने में सक्षम होंगे। 13 जुलाई पहला संभावित लॉन्च दिवस है और यह 19 जुलाई तक जा सकता है।' इससे पहले, सोमनाथ ने कहा था कि 12 जुलाई से 19 जुलाई के बीच की अवधि लॉन्च के लिए तय की गई है।

रॉकेट के टॉप पर लगे पेलोड फेयरिंग में लैंडर, रोवर को प्रोपल्शन मॉड्यूल के साथ जोड़ा गया है,

जो इसे अलग होने से पहले चंद्रमा से 100 किलोमीटर की ऊंचाई तक ले जाएगा।

भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी इसरो ने कहा है कि लैंडर में एक निर्दिष्ट चंद्र स्थल पर सॉफ्ट लैंडिंग करने और रोवर को तैनात करने की क्षमता होगी जो अपनी गतिशीलता के दौरान चंद्रमा की सतह का इन-सीटू रासायनिक विश्लेषण करेगा।

यह महत्वाकांक्षी मिशन चंद्रयान के दो मिशन के बाद तीसरा प्रयास होगा। चंद्रयान-2 चार साल पहले 2019 में चंद्रमा की सतह पर दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। चंद्रयान-3 मिशन चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुवीय क्षेत्र का पता लगाएगा और चंद्रमा की सतह पर सॉफ्ट लैंडिंग करने का प्रयास करेगा, जिससे भारत उस मील के पत्थर तक पहुंचने वाला दुनिया का चौथा देश बन जाएगा।

संक्षिप्त समाचार

कुंवारों को पेंशन देने वाला पहला राज्य बना हरियाणा,सीएम ने किया एलान, DRO-SDM को रजिस्ट्री की पावर

चंडीगढ़। हरियाणा में अब कुंवारों को भी पेंशन मिलेगा। चंडीगढ़ में एक पत्रकारवार्ता में सीएम मनोहर लाल ने 45-60 तक के कुंवारे महिला-पुरुष के लिए 2750 रुपये की पेंशन शुरू करने की घोषणा की। इसका लाभ 180000 से कम वार्षिक आय वाले लोग उठा सकेंगे। 40-60 वर्ष तक के 3 लाख वार्षिक आय तक के विधुर को भी पेंशन मिलेगी। यह करने वाला हरियाणा पहला राज्य बन गया है। इसके अलावा प्रदेश में जमीन के इंतकाल की प्रक्रिया को ऑनलाइन कर दिया गया है। सीएम ने कहा कि हमारे मेनिफेस्टो में समयबद्ध तरीके से करने का वादा किया गया था। रजिस्ट्री के 10 दिन बाद तक पोर्टल पर सबको आपत्ति के लिए दिखेगा, अगर कोई आपत्ति नहीं होती तो उसका इंतकाल हो जाएगा। इसके अलावा मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने एसडीएम और डीआरओ को भी जमीनों की रजिस्ट्री की शक्तियां दी हैं।

महंगाई का असर!

खेत से ढाई लाख रुपये के टमाटर चुरा ले गए चोर, सदमे में किसान

नई दिल्ली/एजेंसी।

देश में महंगाई लगातार बढ़ रही है। गैस सिलेंडर, पेट्रोल-डीजल के अलावा सब्जियों के दाम भी आसमान छू रहे हैं। देशभर में टमाटर की कीमतों ने तो सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। देश के कई राज्यों में टमाटर के दाम 150 रुपये प्रति किलो के पार हो गए हैं। इसी कड़ी में कर्नाटक में एक हैरान करने वाला मामले सामने आया है। टमाटर की बढ़ती कीमतों के बीच कर्नाटक के हासन जिले में चोरों ने एक किसान के खेत में डाका मारा है। चोरों से खेतों से लाखों रुपये के टमाटर चोरी कर लिए।

इस मामले में किसान ने पुलिस को शिकायत दी है। किसान धरनी ने कहा कि उसके खेत से चोरों ने कई किलो टमाटर चुरा लिए हैं। टमाटरों की कीमत करीब ढाई लाख रुपये है। धरनी ने बताया कि उसने दो एकड़ जमीन पर टमाटर की फसल उगाई थी। टमाटर की फसल काटकर वो उसे बाजार में बेचने की प्लानिंग कर रही थी, लेकिन तभी चोरों ने टमाटरों पर हाथ साफ कर दिया।

देश में इन दिनों टमाटर के दाम आसमान छू रहे हैं. हर कोई टमाटर के बढ़ते दामों से परेशान है. देशभर में अलग-अलग स्थानों पर टमाटर 100 से 150 रुपये प्रति किलो तक बिक रहा है. हर कोई उम्मीद कर रहा है कि जल्द ही टमाटर के दाम नीचे आ जाएंगे. इसी बीच कर्नाटक में एक किसान की टमाटर की फसल ही खेतों से चोरी होने का मामला सामने आया है. कर्नाटक के हसन जिले में एक महिला किसान के खेतों से चोर करीब ढाई लाख की कीमत की फसल चुरा कर ले गए.

पीड़ित किसान का नाम धारणी है. वो गोनी सोमनहल्ली गांव में रहती है और वहीं उसकी दो एकड़ की जमीन भी है.

Dipendra Singh
9335448671

R.K. Choudhary
8384831556

RK marbles & tiles

मार्बल & ग्रेनाइट
राजस्थान वाले

रेलवे स्टेशन के सामने, रिंग रोड, दुमका (झारखंड)

संक्षिप्त समाचार

पूर्व विद्यार्थियों के बीच जागरूकता अभियान चलाया

झारखंड देखो/प्रतिनिधि। दुमका। संताल परगना महाविद्यालय में सर्वजन दवा सेवन कार्यक्रम के पूर्व विद्यार्थियों के बीच एक जागरूकता अभियान चलाया गया। इस अभियान का नेतृत्व पी सी आई के जिला प्रतिनिधि अनंत पांडेय ने किया। पी सी आई एक राष्ट्रीय स्तर का कार्यक्रम है जो 2004 से लगातार लोगों के बीच फाइलेरिया से संबंधित जागरूकता अभियान चलाकर सहिया दीदी के द्वारा दवा का वितरण किया जाता है। आगामी कार्यक्रम 10 अगस्त से होने जा रहा है। इस जागरूकता अभियान में मुख्य रूप से दवाओं के सही इस्तेमाल करने पर चर्चा की गयी। महाविद्यालय प्राचार्य डॉ खिरोधर प्रसाद यादव ने विद्यार्थियों से इस अभियान का हिस्सा बनकर लाभ उठाने की बात कही। उक्त जानकारी कॉलेज मीडिया प्रभारी डॉ कुमार सौरभ के द्वारा दी गयी।

निजी/भाड़े गाड़ी से यात्रा करने की सुविधा प्रदान की मांग

झारखंड देखो/प्रतिनिधि। दुमका। सिदो कान्हु मुर्मु विश्वविद्यालय सेवा शिक्षक संघ (स्कमुस्टा) के अध्यक्ष डॉ विवेका नंद सिंह एवं महासचिव डॉ कलानंद ठाकुर ने कुलसचिव को एक पत्र लिखकर विश्वविद्यालय प्रशासन से मांग किया है कि सि का मु विश्वविद्यालय के स्टैच्यूटरी एवं नन-स्टैच्यूटरी शिक्षक पदाधिकारी के तरह सामान्य शिक्षकों को भी विश्वविद्यालय के कि- सी भी कार्य से जाने - आने पर निजी/भाड़े की गाड़ी से यात्रा करने की सुविधा दी जाए। ध्यातव्य है कि पिछले वर्ष से विश्वविद्यालय द्वारा सिर्फ स्टैच्यूटरी एवं नन-स्टैच्यूटरी शिक्षक पदाधिकारी को ही निजी/भाड़े गाड़ी से यात्रा करने की सुविधा दी जाती है। इसके लिए इन्हें विश्वविद्यालय से पूर्व अनुमति लेना की आवश्यकता नहीं होती है।अतः शिक्षकों की मर्यादा को ध्यान में रखते हुए, सेवा शिक्षक संघ विश्वविद्यालय प्रशासन से आग्रह करता है कि सामान्य प्राध्यापकों को भी निजी/भाड़े गाड़ी से यात्रा करने की सुविधा प्रदान किया जाय।

एक दिवसीय विर्चुअल राष्ट्रीय सेमिनार आज

झारखंड देखो/प्रतिनिधि। दुमका। संताल परगना कॉलेज व मेंटल हेल्थ मिशन इंडिया के संयुक्त तत्वाधान में एक दिवसीय विर्चुअल राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया गया है। यह सेमिनार ' रोल ऑफ हायर इंस्टीट्यूशन इन प्रोमोशन ऑफ पॉजिटिव मेंटल हेल्थ बिहेवियेर' विषय पर संरक्षक सह कॉलेज प्राचार्य डॉ खिरोर्ध प्रसाद यादव की अध्यक्षता में तथा नोडल ऑफिसर, मेंटल हेल्थ मिशन, एस पी कॉलेज, दुमका सह मानसिक स्वास्थ्य परामर्श के निदेशक डॉ विनोद कुमार शर्मा के नेतृत्व में आयोजित किया गया है। मुख्य संसाधन सेवी के रूप में मे- रठ कॉलेज, मेरठ के डॉ अनिता मोरल होगी जबकि विशिष्ट अतिथि के तौर पर सी सी एस यूनिवर्सिटी, मेरठ के मनोविज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ संजय कुमार उपस्थित रहेंगे। गूगल मिट पर यह कार्यक्रम अपराह्न 3.00 बजे से आरंभ किया जायेगा जिसका कार्यक्रम समन्यवक डॉ कुमार सौरभ होंगे । इस सेमिनार में शिक्षक, विधार्थी, शोधर्थी व अन्य उच्च शिक्षा संस्थान से जुड़े लोग सहभागी हो सकते है ।

बाबा फौजदारीनाथ के दरबार में कांवरियों की लग रही है भीड़

झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

दुमकाःराजकीय श्रावणी मेला महोत्सव के तीसरे दिन गुरुवार को बाबा फौजदारीनाथ के दरबार में कांवरियों की भीड़ लगी रही।तीन बजे भोर से ही मंदिर प्रांगण शिवगंगा घाट वह मेला परिसर केसरिया रंग से पटा रहा।सरकारी पूजा के बाद 3.40 बजे से श्रद्धालुओं ने बाबा फौजदारीनाथ पर जलार्पण प्रारंभ किया। देर रात से ही श्रद्धालु शिवगंगा में स्नान कर कतारबद्ध हो रहे थे।हर-हर महादेव के ना- रों के साथ श्रद्धालु अपने आराध्य को जलार्पण करने के लिए मंदिर गर्भगृह की और लगातार बढ़ रहे थे।मंदिर परिसर बाबा के जयकारे से गुंजायमान रहा।महिला व पुरुष श्रद्धालुओं ने कतारबद्ध होकर बाबा पर जलार्पण किया।कांवरियों की श्रद्धा भक्ति व आस्था देखते ही बन रही थी।पूरे रुट लाइन में प्रतिनियुक्त दंडाधिकारी सुबह से ही अपने कर्तव्य स्थल पर उपस्थित थे। मंदिर प्रांगण में प्रतिनियुक्त अधिकारियों ने कांवरियों की कतार को सुचारू रूप से गर्भगृह में प्रवेश कराया।

उपायुक्त ने भी मंदिर परिसर एवं रुट लाइन का निरीक्षण किया।इस दौरान उन्होंने प्रतिनियुक्त अधिकारियों को आवशचक निदेश भी दिए।उन्होंने कहा कि श्रद्धालु एक जगह पर एकत्रित नहीं हों,इसका विशेष ध्यान रखा जाय।श्रद्धालु कतारबद्ध होकर जलार्पण करे प्रतिनियुक्त सुरक्षा बल एव दंडाधिकारी इसे सुनिश्चित कराएं।उन्होंने कहा कि सभी प्रतिनियुक्त अधिकारी अपने कर्तव्य स्थल पर पूरे समयावधि तक उपस्थित रहें एवं अपने कर्तव्यों का निर्वहन करें।आपके सहयोगी के आने के बाद ही अपने कर्तव्य स्थल को छोड़ें।इस दौरान उपायुक्त ने मंदिर के सिंह द्वार पर बने मेडिकल कैम्प का निरीक्षण किया।उन्होंने कहा कि सभी आवशचक दवा हमेशा उपलब्ध रहे।श्रद्धालुओं के लिए व्हील चेयर भी रखे जाएं ताकि अधिक स्वास्थ्य बिगड़ जाने पर श्रद्धालु को मेडिकल कैम्प तक लाने में आसानी हो।उन्होंने कहा कि अपने कर्तव्यों का निर्वहन पूरी तत्परता से करें।किसी प्रकार की कठिनाई होने पर विभाग से समन्वय स्थापित करते हुए उसे अविलंब दूर करें।कड़ी धूप में बाबा के भक्तों को किसी प्रकार की कोई कठिनाई नहीं हो।इसको लेकर रुटलाइन में इंद्रवर्षा की व्यवस्था की गयी है।इंद्रवर्षा के माध्यम से ठंडे पानी का छिड़काव पूरे रुट लाइन में किया जा रहा है।इससेश्रद्धालुओं को राहत मिल रही है।

किसी भी भारी मालवाहक वाहनों को खड़ा होने ना दे: उपायुक्त

झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

दुमका। उपायुक्त ने कहा कि राजकीय श्रावणी मेला महोत्सव बासुकीनाथधाम- 2023 दिनांक- 04.07.2023 से 31.08.23 तक बासुकीनाथ में आयोजित की जा रही है। उक्त अवसर पर प्रत्येक रविवार को भागलपुर (बिहार) से गंगाजल लेकर भारी संख्या में श्रद्धालु हंसडीहा - नोनीहाट के रास्ते पैदल चलकर बाबा बासुकीनाथ में जर्लापण / दर्शन करते है।

उक्त मुख्य पथ पर अत्यधिक भा- री एवं मालवाहक वाहनों का परिचालन होता है, जिससे किसी भी प्रकार की अप्रिय घटना / जान-माल की क्षति की संभावना बनी रहती है। इस संबंध में उपायुक्त, दुमका द्वारा श्रावणी मेला के दौरान प्रत्येक रविवार को संध्या 05.00 बजे से सोमवार को दोपहर 12.00 बजे तक भारी एवं मालवाहक वाहनों को उक्त कांवरियाँ पथ को बंद कर रूट डायवर्ट करने हेतु निदेशित किया गया है।

उक्त के आलोक में श्रावणी मेला के अवसर पर बाबा बासुकीनाथधाम आने वाले श्रद्धालुओं के सुरक्षा की दृष्टिकोण से भागलपुर दुमका मुख्य मार्ग पर हंसडीहा - नोनीहाट मार्ग में सिर्फ भारी वाहनों यथा ट्रक, भारी मालवाहक के लिए प्रत्येक रविवार के संध्या 05.00 बजे से सोमवार के दोपहर 12.00 बजे तक नो इनटरी लागु की जाती है । थाना प्रभारी, हॅसडीहा / जरमुण्डी को निदेश दिया गया है कि भागलपुर - दुमका मुख्य मार्ग के हंसडीहा - नोनीहाट पर स्थल चिहिन्त करते हुए जिंग जेग बैरिकेटिंग लगाते हुए उक्त स्थल पर प्रर्याप्त संख्या में पुलिस बल की प्रतिनियुक्ति करेंगे तथा उक्त मार्ग पर रविवार के संध्या से सोमवार के दोपहर तक भारीवाहनों यथा ट्रक, भारी मालवाहक वाहन का परिचालन बन्द रखेंगे। साथ ही यह सुनिश्चित करेंगे कि उक्त मार्ग में सड़क जाम की स्थिति उत्पन्न ना हो एवं हंसडीहा - नोनीहाट मार्ग पर सड़क किनारें किसी भी भारी मालवाहक वाहनों को खड़ा होने ना दे। यह आदेश श्रावणी मेला के मद्देनजर सिर्फ रविवार के संध्या 05.00 बजे से सोमवार के दोपहर 12.00 बजे तक प्रभावी रहेगा ।

बीडीओ ने किया गोदाम का ˙औचक निरीक्षण

झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

दुमका। उपायुक्त दुमका के निदेशानुसार प्रखण्ड परिसर स्थित आपूर्ति से संबंधित गोदाम का औचक निरीक्षण प्रखण्ड विकास पदाधिकारी -सह- प्रखण्ड आपूर्ति पदाधिकारी दुमका सदर के द्वा- रा किया गया। निरीक्षण के समय गोदाम से भुरकुण्डा पंचायत के जन वितरण प्रणाली दुकानदार खेतीस सोरेन का जुलाई माह खाद्यान्न ट्रक में लोड किया जा रहा था । खाद्यान्न के बोरे को चेक किया गया जो सही पाया गया। गोदाम में उपस्थित जन वितरण प्रणाली दुकानदार खेतीस सोरेन से पुछताछ किया गया तथा शत प्रतिशत ऑनलाईन वितरण करने का निदेश दिया गया है। गोदाम से जन वितरण प्रणाली दुकान तक खाद्यान्न पहुँचाने का कार्य डोर स्टेप डिलेवरी के संचालक मो० चॉद अली के द्वारा किया जाता । निरीक्षण के समय मो० चाँद अली द्वारा बताया गया कि डोर स्टेप डिलेवरी के कार्य में कुल 05 गाड़ियों की अनुमति प्राप्त है, जिसके माध्यम से जन वितरण प्रणाली दुकान तक खाद्यान्न पहुँचाया जाता है। गोदाम के सहायक प्रबंधक द्वारा बताया गया कि जुलाई माह का 70 प्रतिशत खाद्यान्न जन वितरण प्रणाली दुकानदारों को पहुँचा दिया गया है। प्रखण्ड विकास पदाधिकारी -सह- प्रखण्ड आपूर्ति पदाधिकारी, दुमका द्वारा डोर स्टेप डिलेवरी के संचालक मो० चॉद अली को तीन दिनों के अन्दर जुलाई माह के शेष खाद्यान्नों को भी जन वितरण प्रणाली दुकानदारों तक पहुँचाने का निदेश दिया गया। इसके अतिरिक्त गोदाम का भौतिक निरीक्षण भी किया गया तथा सहायक गोदाम प्रबंधक को वर्षा को देखते हुए गोदाम की समुचित व्यवस्था दुरूस्त करने का निदेश दिया गया।निरीक्षण के दौरान प्रखण्ड कार्यालय के प्रधान सहायक तथा आपूर्ति से संबंधित कर्मी उपस्थित थे।

प्रतिष्ठान के लिए फूड लाईसेंस/रजिस्ट्रेशन लेना सुनिश्चित करें

झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

दुमका। राजकीय श्रावणी मेला 2023 के अवसर पर बासुकीनाथधाम में श्रद्धालुओं को स्वच्छ एवं सुरक्षित भोजन उपलब्ध हो इसे देखते हुए खाद्य पदार्थो की स्क्रीनिंग जाँच हेतु स्वास्थ्य विभाग द्वारा मोबाईल फूड टेस्टिग लैबोरेटरी की प्रतिनियुक्ति बासुकीनाथ में की गई है। इसी क्रम में आज बासुकीनाथ स्थित विभिन्न खाद्य प्रतिष्ठानों में खाद्य सामग्रियों की जाँच खाद्य सुरक्षा पदाधिकारी, दुमका एवं साहेबगंज तथा एम एफटीएल के खाद्य विश्लेषक एवं अन्य कर्मी द्वा- रा की गई। जाँच के दौरान खाद्य कारोबारियों को प्रतिष्ठान के सामने रखे तैयार खाद्य सामग्रियों को ढक कर रखने का निदेश दिया गया ताकि धुल एवं मक्खीयों से बचाव हो सके। उन्हें खाद्य रंगों के इस्तेमाल नहीं करने का सख्त हिदायत दिया गया। अच्छे गुणवतायुक्त मसाले, तेल एवं अन्य रो मेटेरियल का ही इस्तेमाल करने को कहा गया। जाँच के क्रम में पेड़ा, आचार, दाल, सब्जी, घुघनी, सेव, तेल इत्यादि की स्क्रीनिंग जाँच की गई, जिसमें असफल पाये गये खाद्य सामग्रियों को नष्ट करवाया गया। खाद्य कारोबारियों को खाद्य तेल को तीन बार अधिक इस्तेमाल नहीं करने का निदेश दिया गया। दो खाद्य कारोबारियों पर अर्थदण्ड भी लगाया गया है एवं खाद्य नमूना संग्रह कर जाँच हेतु लैब भेजा गया है। खाद्य सुरक्षा पदाधिकारी, दुमका द्वारा बताया गया कि खाद्य सामग्रियों में मिलावट की रोकथाम एवं श्रद्धालुओं को स्वच्छ भोजन उपलब्ध हो सके इसके लिए खाद्य प्रतिष्ठानों की पूरे मेला अवधि में निरंतर जाँच की जायेगी। निरीक्षण के क्रम में किसी तरह की अनियमिता पाये जाने पर खाद्य सुरक्षा और मानक अधिनियम 2006 के तहत अर्थदण्ड लगाया जायेगा। साथ ही जो खाद्य कारोबारी अभी तक फूड लाईसेंस/रजिस्ट्रेशन नहीं लिये है वे यथाशीघ्र अपने प्रतिष्ठान के लिए फूड लाईसेंस/रजिस्ट्रेशन लेना सुनिश्चित करें।

छात्राओं के बीच मतदाता सूची विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

दुमका। जिला निर्वाचन पदाधिकारी -सह- उपायुक्त, दुमका के निदेशानुसार सहायक निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी-सह- प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, दुमका राजेश कुमार सिन्हा द्वारा सदर प्रखण्ड अन्तर्गत सिद्धो-कान्हू उच्च विद्यालय, दुमका के कक्षा 12 के छात्राओं के बीच मतदाता सूची विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण 2024 जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया । सहायक निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी-सह- प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, दुमका द्वारा प्री- रिविजन एक्टीवीटी, विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण 2024 के उद्देश्यों को विस्तारपूर्वक जानकारी देते हुए यह बताया गया कि जिन छात्राओं का उम्र आगामी 01.01.2024 को 18 वर्ष पूर्ण हो रहा है, ऐसे सभी छात्राओं का नाम मतदाता सूची में नाम दर्ज कराया जाना है । विद्यालय प्रबंधन के सचिव प्रदीप्तो मुखर्जी के द्वारा भी विद्यालय के छात्र / छात्रओं से मतदाता सूची में नाम दर्ज कराने का अनुरोध किया गया विद्यालय प्रबंधन के मानव संसाधन प्रमुख रोदोसी मुखर्जी के द्वारा बताया गया कि कुल 50 छात्र / छात्राओं का उम्र दिनांक 01.01.2024 को 18 वर्ष पूर्ण हो रहा है। ऐसे सभी छात्राओं को मतदाता सूची में नाम दर्ज करने हेतु प्रपत्र - 6 उपलब्ध कराया गया। साथ ही वोटर हेल्प लाईन ऐप से भी ऑनलाईन आवेदन करने का जानकारी देते हुए नाम दर्ज करने हेतु अनुरोध किया गया । बी०एल०ओ० एवं बी०एल० ओ० सुपरवाईजर की उपस्थिति में कुछ छात्राओं का प्रपत्र - 6 ऑनलाईन प्रक्रिया के माध्यम से संबंधित बी०एल०ओ० के द्वारा दर्ज कराया गया । इस अवसर पर विद्यालय के शिक्षकगण, संबंधित मतदान केन्द्र के बी०एल०ओ० बी०एल०ओ० सुपरवाईजर, प्रभारी प्रखण्ड कल्याण पदाधिकारी, ऑपरेटर आदि उपस्थित थे।

TO-LET
(3600 sq ft)
GROUND FLOOR
7 room late bath attach
SECOND FLOOR
4 room and 1 hall late bath attach
Address-lakhikundi (bridge left side),Dumka
Contact number-7004213289

जयंती पर याद किए गए डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी

पाकुड़/झारखंड देखो।

भारतीय जनसंघ के संस्थापक प्रखर राष्ट्रवादी अमर शहीद डॉ शयामा प्रसाद मुखर्जी के 121 वीं जयंती के अवसर पर पाकुड नगर स्थित डॉ शयामा प्रसाद मुखर्जी मार्केट कंपलेक्स में स्थापित उनकी आदमकद प्रतिमा पर भाजपा नगर अध्यक्ष पंकज कुमार साह के नेतृत्व में भाजपा कार्यकर्ताओं ने माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित कर नमन किया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से भाजपा जिलाध्यक्ष अमृत पाण्डेय, भाजपा प्रदेश कार्यसमिति के सदस्य अनुग्राहित प्रसाद साह,मीरा प्रवीण सिंह, निवर्तमान नगर परिषद अध्यक्ष सम्पा साहा, भाजपा जिला उपाध्यक्ष हिसाबी राय, दिलीप सिंह, जिला महामंत्री शीलारानी हेम्ब्रम, दुर्गा मरांडी मौजूद थे। इस अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष अमृत पाण्डेय ने कहा कि मैं डॉ शयामा प्रसाद मुखर्जी के जयंती पर उन्हें नमन करता हूं। उनके आदर्श लाखों को प्रेरणा देते हैं डॉ मुखर्जी ने अपना जीवन भारत की एकता और प्रगति में खपा दिया। उन्होंने एक विद्वान और बुद्धिजीवी के रूप में अपनी पहचान बनाई। भाजपा के वरिष्ठ नेता अनुग्राहित प्रसाद साह ने कहा कि देशभक्त और राष्ट्रवादी डॉ शयामा प्रसाद मुखर्जी ने भारत की एकता और अखंडता के लिए अपना जीवन

समर्पित किया।हमारे प्रेरणा स्रोत एक प्रखर राष्ट्रवादी विचारक श्रद्धेय डॉ शयामा प्रसाद मुखर्जी के जयंती पर उन्हें कोटि-कोटि नमन .जिला उपाध्यक्ष हिसाबी राय ने कहा कि डॉ शयामा प्रसाद मुखर्जी भारतीय

- **व्यक्तित्व-कृतित्व से ली जा रही प्रेरणा**

जनसंघ के संस्थापक में रहे हैं।जम्मू कश्मीर में लगाए गए अनुच्छेद 370 के खिलाफ मुखर रूप से आवाज उठाने वालों वाले लोगों में डॉ मुखर्जी का नाम सबसे पहले आता है। डॉ शयामा प्रसाद मुखर्जी स्वतंत्र भारत के पहले कैबिनेट मंत्री रहे थे,जो जम्मू कश्मीर के मामले में उन्होंने इस्तीफा दे दिया।उन्होंने नारा दिया ₹देश में दो निशान-दो विधान-दो प्रधान₹ नहीं चलेगा। मालार्पण के उपरांत संपर्क से समर्थन कार्यक्रम के अंतर्गत महासंपर्क अभियान के तहत बगानपाड़ा में घर घर जाकर आम लोगों से संपर्क कर केंद्र सरकार के 9 वर्ष पूरे होने पर उनकी उपलब्धियों को बताया गया,साथ ही आमजनों के द्वारा 9090902024 पर मिस कॉल कर मोदी जी का समर्थन किया गया। कार्यक्रम में पार्वती देवी, प्राची चौधरी, शबरी पाल, बहादुर मंडल, असीम मंडल, सोहन मंडल, पिंका पटेल, गणेश रजक, सुशील साहा, पार्थ रक्षित, पवन भगत, मिट्ठू भगत, मोहन मंडल, गोपी दुबे, धर्मेंद्र त्रिवेदी, रामचंद्र दास मौजूद थे। वही पाकुड़िया प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा देश में सुव्यवथा, गरीब लोगों के कल्याण के 9 वर्ष एवं डॉ शयामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान दिवस के अवसर पर गुरुवार को पाकुड़िया प्रखंड अंतर्गत बूथ संख्या 183 में कार्यक्रम आयोजन किया गया। सर्वप्रथम डॉ शयामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र में माल्यार्पण कर श्रद्धा सुमन अर्पित कर बलिदान दिवस के रूप में मनाया गया एवं घर घर जाकर जनसंपर्क अभियान के तहत मोदी सरकार के 9 वर्ष के उपलब्धियों के बारे में बताया गया एवं योजनाओं के बारे में जागरूक किया गया कार्यक्रम का अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष विजय भगत के द्वारा आयोजन किया गया साथ में उपस्थित जिला अध्यक्ष युवा मोर्चा जयसेन बेसरा, जिला अध्यक्ष तपन मंडल, किसान मोर्चा सुकलाल मिर्धा, हृदयानंद भगत साथ में भाजपा के दर्जनों कार्यकर्ता उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री ने चिकित्सक एवं चिकित्सा कर्मियों को किया सम्मानित

पाकुड़/झारखंड देखो। राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस के उपलक्ष पर मुख्यमंत्री झारखंड हेमंत सोरेन द्वारा चिकित्सक एवं चिकित्सा कर्मियों को सम्मानित किया गया। सम्मानित किए गए चिकित्सक एवं चिकित्सा कर्मियों को उपायुक्त वरुण रंजन ने दी बधाई। राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस के उपलक्ष पर आईपीएच नामकुम के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में माननीय मुख्यमंत्री झारखंड हेमंत सोरेन एवं स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता के समक्ष उत्कृष्ट कार्य करने वाले चिकित्सक एवं चिकित्सक कर्मियों को सम्मानित किया गया जिसमें पाकुड़ के भी चिकित्सक एवं चिकित्सा कर्मी उपस्थित रहें। सम्मान पाने वालों में डॉ अमित कुमार डॉ सोहेल अनवर डॉक्टर के के सिंह डॉ सुनील कुमार सिंह एवं चिकित्सा कर्मी मोहम्मद सफीक एवं नवीन कुमार उपस्थित थे।

डीइओ ने उत्कृष्ट विद्यालय में नामांकन के लिए चयनित छात्रों से की अपील

- **10 जुलाई तक नामांकन सुनिश्चित करने की कही बात**
- **10 जुलाई तक नामांकन नहीं कराने पर नामांकन के दावे को किया जाएगा निरस्त**

पाकुड़/झारखंड देखो। उत्कृष्ट विद्यालय मे छुटे हुए चयनित छात्र-छात्राओं से नामांकन कराने की अपील जिला शिक्षा पदाधिकारी रजनी देवी ने की है. उन्होंने बताया कि जिले के तीन उत्कृष्ट विद्यालय सीएम उत्कृष्ट विद्यालय राज प्लस टू पाकुड़, केजीबीवी सीएम उत्कृष्ट विद्यालय पाकुड़ एवं सीएम उत्कृष्ट विद्यालय राजकीय कन्या विद्यालय पाकुड़ में नामांकन हेतु प्रथम मेधा सूची प्रकाशित की गयी थी. उक्त सूची से चयनित अभी भी कुछ छात्र-छात्राओं के द्वारा नामांकन नहीं लिया गया है. उन्होंने बताया कि सभी चयनित छात्रों को 10 जुलाई तक नामांकन कराना है. 10 जुलाई तक चयनित छात्र एवं छात्राएं अगर नामांकन नहीं कराते है तो उनके नामांकन के दावे को निरस्त करते हुए द्वितीय मेधा सूची का प्रकाशन किया जाएगा.

अखिल भारतीय बैठक दिल्ली में भाग लेंगे झारखंड के डॉ रणजीत कुमार सिंह

पाकुड़/झारखंड देखो। दो दिवसीय राष्ट्रीय बैठक में क्रीड़ा भारती के झारखंड प्रांत के प्रमुख प्रचार प्रसार प्रमुख डॉ रणजीत कुमार सिंह भाग लेंगे। जिसमें खेल और खिलाड़ी से संबंधित चल रहे गतिविधियों की जानकारी खेल में तकनीकी जानकारी ग्रामीण स्तर के खिलाड़ियों को और इसके लिए क्रीड़ा भारती का ग्रामीण स्तर के खेल खिलाड़ी के प्रतिभा को पहचान कर जिला राज्य और राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्तर पहुंचाने की जिम्मेवारी शासन सरकार के साथ कीड़ा भारती भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। कीड़ा भारती खेल के साथ साहित्य संस्करण डॉक्यूमेंट्री डॉक्यूमेंटेशन आदि को लेकर जानकारी दी जाएगी। झारखंड में क्रीड़ा भारती सभी जिले में विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से खेल या योगा हो या किसी तरह का खेल प्रतियोगिता हो अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है, और खिलाड़ियों को प्रोत्साहित कर उसे तकनीकी प्रशिक्षण क्रीड़ा भारती के द्वारा दी जा रही है। खेल खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने के लिए जिला स्तर प्रखंड एवं गांव स्तर पर भी प्रतियोगिताएं कराई जा रही है। क्रीड़ा भारती परंपरिक खेल को ज्यादा प्रोत्साहित कर खेल को खेल प्रिय जनप्रिय बना रही है। खेल से केवल खिलाड़ी ही नहीं बल्कि अन्य लोग भी अपने स्वास्थ्य का ध्यान रख सकते हैं और आपने को स्वस्थ रख सकते हैं।

आज आधुनिक जीवन शैली भागदौड़ भरी जिंदगी में राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय त्रासदी मानव स्वास्थ्य को लेकर चिंता का विषय बना हुआ है। इसलिए हर व्यक्ति को युवा हो या बुजुर्ग सभी अपने जीवन में कोई न कोई खेल जरूर खेलना चाहिए ताकि वह खुद स्वयं स्वस्थ रहें और अपने परिवार और समाज राष्ट्र को भी स्वस्थ रखें। बैठक 8 और 9 जुलाई 2023 को शिमला हेरिटेज होटल चन्ना मार्केट करोल बाग दिल्ली में आयोजित की गई है।

भाजपा का महाजनसमपर्क आभियान का सभी कार्यक्रम का बिंदुवार समीक्षा किया : सरोज सिंह

हिरणपुर(पाकुड़)/झारखंड देखो। लिट्टीपाड़ा विधानसभा स्तरीय भाजपा पदाधिकारियों की बैठक हिरणपुर भाजपा कार्यालय में जिला अध्यक्ष अमृत पांडे की अध्यक्षता में संपन्न हुई। जिसमें मुख्य रूप से प्रदेश प्रवक्ता सह राजमहल लोकसभा प्रभारी सरोज सिंह उपस्थित रहे। आगामी 30 मई से 30 जून तक भाजपा का महाजनसमपर्क आभियान का सभी कार्यक्रम का बिंदुवार समीक्षा किया गया। बाकी शेष बचे कार्यक्रम को 10 जुलाई तक विधानसभा के पार्टी पदाधिकारी एव नेता गण को पूर्ण करने का आदेश दिया गया। साथ ही आज डॉ शयामा प्रसाद मुखर्जी का जन्म जयंती मनाया गया। उनके जीवनी पर सभी नेतागण अपने अपने प्रकाश डाले। इस बैठक में मुख्य रूप से ज़िला अध्यक्ष अमृत पांडे, विधानसभा संयोजक दानियाल किस्कू प्रदेश मंत्री शर्मिला रजक, एस सी मोर्चा प्रदेश मंत्री कामेश्वर दास, एसटी मोर्चा प्रदेश कार्य समिति सदस्य साहेब हांसदा जिला महामंत्री विजय भगत ने मंच संचालन किया मौके पर उपस्थित जिला मंत्री जामु मरांडी, एसटी ज़िला उपाध्यक्ष किस्टू सोरेन सोशल मीडिया जिला प्रभारी जयंत मंडल अध्यक्ष कैलाश सिंह तरुण साहा, नकुल साहा, आशीष हेंब्रम, महिला मोर्चा जिला महामंत्री सुप्रिति मालतो, जिला कार्य समिति सदस्य नरेंद्र साहा, विजय भगत, राम मंडल, मंडल महामंत्री राम सेन, गणेश मंडल, विधानसभा कौर कमिट सदस्य गुरुदयाल साहा, मायनो हेंब्रम सुकुमार मंडल, बासुदाम मंडल बिशन हेंब्रम मनोज साहा, लिवीस किस्कू आदि कार्यकर्ता मौजूद रहे।

पाकुड़िया के प्रत्येक पंचायत भवन में रोजगार दिवस मनाया

पाकुड़िया(पाकुड़)/झारखंड देखो। पाकुड़िया प्रखंड के 18 पंचायतों में गुरुवार को रोजगार दिवस कार्यक्रम का आयोजन मुखिया के नेतृत्व में आयोजित किया गया। रोजगार दिवस के मौके पर पाकुड़िया, मोंगलाबाँध, तेतुलिया, खक्सा, बड़ा सिंहपुर, बन्नोग्राम, फुलझूझरी सहित अनेक पंचायतों में ग्रामीणों की मौजूदगी में रोजगार दिवस का आयोजन हुआ। मौके पर बीडीओ मनोज कुमार एवं सीओ किरण डांग ने कई पंचायत कार्यालयों में पहुँच कर लोगो की समस्याओं को सुना। इस दौरान मनरेगा का नया जॉबकार्ड का पंजीकरण, रोजगार का आवंटन,समाजिक सुरक्षा पेंशन योजना, आवास निर्माण योजना सहित अन्य से संबंधित समस्याओं को सुना। साथ ही बीडीओ कुमार ने पंचायत सचिव को इन सभी समस्याओं का समाधान करने का कड़ा निर्देश दिया। मोके पर पंचायत भवन में पंचायत के ग्रामीण उपस्थित थे।

कांग्रेस पार्टी के संगठन की मजबूती को लेकर किया गया पंचायत कमेटी का गठन

पाकुड़िया(पाकुड़)/झारखंड देखो। पाकुड़ जिला कांग्रेस अल्पसंख्यक अध्यक्ष मोहम्मद शाहीन परवेज के आ''ान पर गुरुवार को पाकुड़िया प्रखंड कांग्रेस अल्पसंख्यक अध्यक्ष मोहम्मद गनी शेख के अध्यक्षता में तथा जिला महासचिव सह लिट्टीपाड़ा प्रभारी युवा नेता दाऊद मरांडी की उपस्थिति में तीन पंचायत में बैठक कर पंचायत कमिटी का गठन किया गया। जो क्रमशः पलियादहा खकसा फुलझिंझरी है। पलियादहा पंचायत में अध्यक्ष जाकिर मियां सचिव रकीबुल से कोषाध्यक्ष गुलाम इस्माइल अंसारी तथा खकसा पंचायत में अध्यक्ष जफर अंसारी सचिव मैनुद्दीन मियां कोषाध्यक्ष सिकंदर अंसारी है। शेख ने बताया की पाकुड़िया प्रखंड के अंतर्गत सभी अल्पसंख्यक पंचायतों में कमिटी गठन कर अलाकमान को जलद सौंपेंगे। बैठक के दरमियान मरांडी ने कहा आज देश भर में कांग्रेस को तथा राहुल गांधी को मजबूती दिलाने के लिए संगठन का काम जोर शोर से करने का आम लोगों से अपील की तथा, 2024 के चुनाव में अच्छा परिणाम आने का संकेत दिया। इस अवसर पर हासेन अंसारी, नाजिम अंसारी , मैनुद्दीन मियाँ ,आफताब नयाशहाबुद्दीन अंसारी, जियाउल शेख, कुददुस मिंया, नाफिल अंसारी, मार्सेल मियां, तैमुर मियां, अजीमुद्दीन अंसारी , सद्दाम अंसारी, नूर आलम, उस्मान मियां ,परवेज आलम, सोहेल अंसारी, जियाउल हक मंजर अंसारी, इमाम अंसारी सहित दर्जनों कार्यकर्ता उपस्थित थे ।

श्रावणी मेला के दौरान रविवार, सोमवार व मंगलवार को सावधानी बरतते हुए सभी को एक्टिव रहने की आवश्यकताः उपायुक्त

देवघर।

राजकीय श्रावणी मेला, 2023 के दौरान देवतुल्य श्रद्धालुओं के सुलभ व सुरक्षित जलार्पण को लेकर उपायुक्त मंजुनाथ भंजत्री की अध्यक्षता में आज दिनांक 06.07.2023 मेला क्षेत्र में प्रतिनियुक्त दण्डाधिकारी व अधिकारियों के साथ बैठक का आयोजन किया गया। इस दौरान उपायुक्त ने रुटलाइन में श्रद्धालुओं की सुविधा को लेकर किए गए इंतजामों पर चर्चा करते हुए आगामी रविवार, सोमवार व मंगलवार को होने वाली श्रद्धालुओं की भीड़ के अलावा आपदा प्रबंधन से जुड़े विभिन्न बिन्दुओं को लेकर किये गए कार्यों को लेकर संबंधित अधिकारियों को आवशचक व उचित दिशा निर्देश दिया।

इसके अलावे बैठक के दौरान उपायुक्त ने बाघमारा बस स्टैंड समीप टेंट सिटी परिसर में और शौचालय निर्माण कराने के अलावा टेंट सिटी परिसर को और हवादार बनाने का निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिया। साथ ही उपायुक्त ने सम्पूर्ण रुटलाइन में विशेष साफ-सफाई के अलावा नंदन पहाड़ से कुमैठा स्टेडियम तक छोटे छोटे बालू के कण को झाड़ू लागगकर हटाने का निर्देश दिया, ताकि श्रद्धालुओं को चलने में किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े। वहीं मेला क्षेत्र में चिन्हित स्थलों पर आवशचकतानुसार एनडीआरएफ व सीआरपीएफ की महिला बटालियन को प्रतिनियुक्त करने का निदेश दिया। साथ ही आगामी रविवार, सोमवार व मंगलवार को बाबा नगरी में जलार्पण करने के लिए आने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा व सुरक्षा के इंतजामों की समीक्षा करते हुए संबंधित अधिकारियों व प्रतिनियुक्त दंडाधिकारियों को आवशचक व उचित दिशा निर्देश दिया। आगे उपायुक्त ने स्वास्थ्य केंद्रों के अलावा मेला क्षेत्र में सभी 31 सूचना केन्द्रों को एक्टिव मोड में 24 घंटे कार्य करने का निर्देश दिया।

बैठक के दौरान उपायुक्त ने मेला क्षेत्र में प्रतिनियुक्त सभी दंडाधिकारियों, पुलिस पदाधिकारियों, केन्द्रीय बल एवं पुलिस बल के जवानों को निदेशित किया कि बाबा बैद्यनाथ की नगरी देवघर आने वाले देवतुल्य श्रद्धालुओं से सेवा-भाव व विनम्रता से पेश आए, ताकि श्रद्धालु एक अच्छी अनुभूति प्राप्त कर अपने गंतव्य की ओर प्रस्थान करें । आगे उपायुक्त ने मेला क्षेत्र अंतर्गत स्वास्थ्य केन्द्रों में ब्रेस्ट फिडिंग कॉनर एवं महिला श्रद्धालुओं की सुविधा हेतु सुचना केन्द्रों के साथ स्वास्थ्य केन्द्रों में निःशुल्क सेनेटरी पैड की वस्तुस्थिति से अवगत हुए। साथ हीं सम्पूर्ण मेला क्षेत्र में श्रद्धालुओं की सुरक्षा को लेकर सभी सीसीटीवी कैमरा एवं आईएमसीआर कंट्रोल रूम को 24 घंटे एक्टिव रखने का निर्देश दिया। उपायुक्त ने श्रावणी मेला के दौरान आने वाले दिनों में होने वाली अप्रत्याशित श्रद्धालुओं की भीड़ को लेकर आपसी समन्वय के साथ श्रद्धालुओं की सुविधा को लेकर एक्टिव रहने का निर्देश संबंधित अधिकारियों व दण्डाधिकारियों को दिया ।

सड़क सुरक्षा के सदस्यों ने यातायात के सभी नियमों को पालन करने को लेकर छात्राओं को किया जागरूक

पाकुड़/झारखंड देखो।

जिला परिवहन विभाग के रोड सेफ्टी सेल के सदस्यों के द्वारा रितेश कुमार सिंह (जिला सड़क सुरक्षा प्रबंधक), अज़हद अंसारी (रोड इंजीनियर एनालिसिस्ट) एवंआई आर ए डी के अंकित कुमार राम आयुवेद के रानी ज्योतिर्मयी उच्च विद्यालय के सभी विद्यार्थियों को सड़क सुरक्षा के माध्यम से यातायात के सभी नियमों को पालन करने को लेकर जागरूक किया गया। जिसमे मुख्य रूप से जिला मे हो रहे सड़क दुर्घटनाओ के बारे में बताया गया। माह जनवरी 23 से माह जून 23 तक कुल 41 सड़क दुर्घटना हुई है। जिसमे 35 लोगो इन सड़क दुर्घटना मे मृत्यु हुई है, और 15 लोग गंभीर रूप से घायल हुए है। और इन सड़क दुर्घटनाओ से कैसे बचा जाए। इसके बारे में विस्तार से बताया गया। साथ ही सड़क पर चलते समय क्या सावधानी बारतना चाहिए इसके बारे मे भी जागरूकता के माध्यम से जागरूक किया गया। सभी पाकुड़ जिलावासियों एवं वाहन चालको को सावधानी बारतना चाहिए वो है :- सभी स्कूल बस एवं अन्य भारी एवं हल्की वाहन कई गति सिमित रखने, हेलमेट का उपयोग करने, शीट बेल्ट लगाने, शराब पीकर वाहन न चलाने, ड्राइविंग लाइसेंस बना कर ही वाहन का परिचालन करने, ओवर टेक करने से बचने, वाहन के सभी कागजात दुरुस्त रखने एवं यातायात के नियमों का खुद पालन करने तथा दुसरो को भी पालन करने को लेकर भी जागरूक किया। गार्जियन अपने बच्चों को कम उम्र मे वाहन का परिचालन नहीं करने यथा वाहन परिचालन के लिए नहीं दे। साथ ही हिट एण्ड रन एवं गुड सेमिरिथन के सभी नियमो एवं इसमे मिलने वाले सभी मुआवजा को बताया गया। सड़क पर वाहन चलाते समय ट्रैफिक नियमों के सभी जरुरी नियमों का पालन करें और अपने स्तर से भी ज्यादा से ज्यादा लोगो को भी जागरूक करें एवं साथ ही रोड़ सेफ्टी हैण्डबुक, रोड एक्सीडेंट ईयर 2022 का सड़क दुर्घटना का बुक और रोड़ सेफ्टी पम्पलेट भी वितरण किया गया।

संक्षिप्त समाचार

इनर व्हील क्लब देवघर ने लहराया परचम

देवघर। आशुतोष झा। इनर व्हील क्लब देवघर ने फिर लहराया परचम और अध्यक्ष सरिता अग्रवाल ने जीते और बेस्ट प्रेसिडेंट अवार्ड।इनरव्हील क्लब का वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह 'अक्षिता' मुजफ्फरपुर में संपन्न हुआ। इसमें इनरव्हील क्लब ऑफ देवघर ने सत्र 2022-23 के लिए अनेक अवार्ड जीते। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन डीसी डा रीता झा तथा मुख्य अतिथि आई आई डब्ल्यू एडिटर एंड मीडिया मैनेजर प्रभा रघुनंदन द्वारा तथा सभी डिस्ट्रिक्ट एग्जीक्यूटिव मेंबर्स द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।इसके बाद सिलसिला शुरू हुआ सभी कैटेगरी के क्लबों का पारितोषिक वितरण। जिसमें आईडबलयूसी इनर व्हील क्लब देवघर ने कुल 75 क्लब्स ने , लगभग 45 कैटेगरी में अनेक पुरस्कार जीते।

बेस्ट क्लब अवार्ड -इनर व्हील क्लब ऑ×फ देवघर ,बेस्ट प्रेसिडेंट अवार्ड -सरिता अग्रवाल, एफिशिएट सचिव अवार्ड -अर्पणा सिन्हा, आउटस्टैंडिंग कोषाध्यक्ष अवार्ड -सारिका साह

आउटस्टैंडिंग एडिटर अवार्ड ज्ञानी मिश्रा इनर व्हील क्लब देवघर के विभिन्न प्रोजेक्ट जैसे अन्नपूर्णा प्रोजेक्ट के लिए बेस्ट अवॉर्ड पिंक टॉयलेट, हैंड वाश स्टेशन अवार्ड, सोलर लाइट्स, मैराथन फॉर कैंसर अवॉर्नेस, वूमेन एजुकेशन, ड्रग्स अवॉरनेस, आदि के लिए इनरव्हील देवघर को बेस्ट प्रोजेक्ट अवार्ड मिला।

इस तरह इनर व्हील क्लब देवघर ने अनेकानेक पुरस्कार प्राप्त किया। और भविष्य में भी इसी तरह अपनी सफलता का परचम लहराता रहेगा ऐसा विश्वास है। पुरस्कार प्राप्त कर क्लब के मेंबर्स की खुशी का ठिकाना ना था अपने दम पर, अपनी मेहनत से ,अपनी पहचान बनाकर और पुरस्कार प्राप्त कर सारे सदस्य बहुत खुश थे।अवॉर्ड फंक्शन में शिरकत करने वाले सदस्य थे प्रेसिडेंट सरिता अग्रवाल , आईपीपी रश्मि रंजन झा, कोषाध्यक्ष सारिका साह,उपाध्यक्ष ममता किरण, अर्चना भगत ,कंचन मूर्ति आदि।

मारवाड़ी कांवर संघ द्वारा की जा कांवरियों की अनवरत सेवा

देवघर।आशुतोष झा। सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है इसी बात को ध्यान में रखते हुए मारवाड़ी कांवर संघ परिवार द्वारा हरेक साल की भांति इस साल भी निःशुल्क चिकित्सा मोबाइल जल वितरण निःशुल्क ठहराने की व्यवस्था निःशुल्क शोचालय नींबू पानी शरबत के साथ निःशुल्क भोजन और जिन शिवभक्तो का पैसा खो जाता है उनको घर तक पहुंचाने के लिए आर्थिक व्यवस्था किया जाता है।इस पुनीत काम को अंजाम तक पहुंचाने के लिए संघ के महामंत्री नथमल अग्रवाल सुरेश शर्मा मंत्री जय प्रकाश मिश्र संयुक्त मंत्री सतीश जैन सदस्य के साथ प्रबंधक अनुज झा लगे हुए है।

देवघर जिला कांग्रेस कमेटी द्वारा शिवराज सिंह चौहान का दहन किया गया पुतला

देवघर। तपेशानंद माथुर। मध्यप्रदेश में भाजपा नेता प्रवेश शुक्ला के द्वारा एक आदिवासी युवक पर पेशाब करने की घटना को लेकर जिला कांग्रेस कमिटी द्वारा जिलाध्यक्ष प्रो उदय प्रकाश की अगुवाई में मध्य प्रदेश के भाजपा मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का पुतला दहन किया गया। वहीं मध्य प्रदेश की शिवराज सरकार को अविलंब भंग करने का मांग किया गया तथा भारत सरकार का पुरजोर विरोध किया गया। घटना पर कड़ी आलोचना करते हुए जिला अध्यक्ष प्रो उदय प्रकाश ने कहा कि मध्य प्रदेश के सीधी जिला के कुबरी गांव में वहां के सिटी विधायक पंडित केदार शुक्ला के विधायक प्रतिनिधि एवं भाजपा नेता प्रवेश शुक्ला द्वारा एक आदिवासी युवक पर पेशाब करना एक अमानवीय तथा शर्मनाक घटना है। इस घटना ने पूरे देश को शर्मसार किया है। भाजपा शासन में सत्ता के नशे में धूत अहंकारी शिवराज सरकार का असली चाल, चरित्र और चेहरा का उजागर हुआ है। जिला प्रवक्ता दिनेश कुमार मंडल ने भाजपा नेता द्वारा ऐसे कुकृत्य पर करारा प्रहार करते हुए कहा कि भारतीय जनता पार्टी हमेशा आदिवासियों,दलितों, पिछड़ों,अल्पसंख्यकों तथा गरीब एवं कमजोर वर्ग के लोगों का विरोधी रहा है। इस दौरान प्रदेश सचिव नागेश्वर सिंह, मिडिया प्रभारी दिनेश कुमार मंडल,जिला उपाध्यक्ष कुमार विनायक,रवि गुप्ता,नगर अध्यक्ष रवि केसरी,सोसल मीडिया प्रभारी अमित पांडेय, महेंद्र यादव,गणेश दास,डा अनुप, संथाल परगना प्रमंडलीय एनएसयूआई अध्यक्ष रवि बर्मा,सौरभ कुमार, सुभाष मंडल, प्रखंड अध्यक्ष नटराज प्रदीप,अश्वनी कुमार,विकास यादव,दिलीप ठाकुर,रामाकांत कुमार, कार्तिक यादव,बेलालुद्दीन अंसारी, राहुल राज शेफ दानिश,सूरज सिंह, दिलिप यादव आदि दर्जनों नेता एवं कार्यकर्ता मौजूद थे।

संक्षिप्त समाचार

सीसीटीवी से असामाजिक तत्वों पर रखी जा रही है नजर

दुमका/झारखंड देखो/प्रतिनिधि। एक माह तक चलनेवाले राजकीय श्रावणी मेला 2023 के दौरान श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की कोई कठिनाई नहीं हो किसी प्रकार की विपरीत स्थिति उत्पन्न नहीं हो. इस के लिए बासुकिनाथ, दर्शनिया टीकर मेला क्षेत्र समेत अन्य महत्वपूर्ण स्थलों पर लगभग 600 सीसीटीवी कैमरे लगाये गये हैं. सीसीटीवी के माध्यम से असामाजिक तत्वों के साथ मेला क्षेत्र की हर गतिविधियों पर नजर रखी जा रही है। इसके लिए 24 घंटे अधिकारियों व कर्मियों की प्रतिनियुक्ति की गयी है।

उपायुक्त ने मंदिर के प्रशानिक भवन स्थित कंट्रोल रूम पहुँच कर सीसीटीवी के माध्यम से पूरे मेला क्षेत्र का अवलोकन किया।उन्होंने प्रतिनियुक्त अधिकारियों,कर्मियों से कहा कि चप्पे चप्पे पर निगरानी रखी जाए।किसी प्रकार की कोई कमी या किसी प्रकार की महत्वपूर्ण जानकारी हो तो अविलंब वरीय पदाधिकारी तक सूचना पहुचाने का कार्य करें।

उन्होंने कहा कि पूरे मेला क्षेत्र में किसी प्रकार की विपरीत स्थिति तथा श्रद्धालुओं की सुरक्षा में कोई कमी दिखाई दे तो अविलंब वरीय अधिकारियों को सूचना देने का कार्य करें।

24971 श्रद्धालुओं ने किया बाबा फौजदारी नाथ पर जलार्पण

दुमका/झारखंड देखो/प्रतिनिधि। राजकीय श्रावणी मेला महोत्सव-2023 के तीसरे दिन 24971 श्रद्धालुओं ने बाबा फौजदारी नाथ पर जलार्पण किया।शीघ्र दर्शनम से 532 श्रद्धालुओं ने जलार्पण किया है।शीघ्र दर्शनम से 1,59,600 रुपये,दान पेटी से से 1,58,560,गोलक से 58000,अन्य स्त्रोत से 22777 रुपये प्राप्त हुए।चांदी का सिक्का 5 ग्राम का 2 पीस बिक्री हुआ तथा गोलक से 21 ग्राम सोना प्राप्त हुआ।

उत्कृष्ट कार्य हेतु सम्मानित डॉ तुषार ज्योति को संघ ने किया सम्मानित

दुमका/झारखंड देखो/प्रतिनिधि। दुमका हैंडबॉल संघ के सचिव फरीद खान के द्वारा आयुष्मान भारत मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना में उत्कृष्ट कार्य हेतु सम्मानित डॉक्टर तुषार ज्योति को बुके देकर सम्मानित किया और बधाई दिया।

फरीद खान ने बताया कि दुमका के लिए गर्व की बात है। कि हमारे बड़े भैया डॉक्टर तुषार ज्योति को रांची में डॉक्टर डे के दिन सम्मानित किया गया ।आयुष्मान भारत मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना का लाभ दुमका के सभी प्लेयर को भी मिल रहा है। हाल ही में दुमका के नेशनल प्लेयर अंजू टूडू और नेशनल मेडलिस्ट सुल्तान खान को मैच के दौरान लिगामेंट फ्रैक्चर हो गया था। जिसमें डॉक्टर तुषार ज्योति के द्वारा मुफ्त इलाज किया गया जिससे यह दोनों खिलाड़ी पूर्ण रूप से ठीक होकर खेल में वापसी कर चुके हैं। साजिद इमाम के द्वारा बताया गया डॉक्टर तुषार ज्योति के द्वारा दुमका में हजारों मरीज का मुफ्त इलाज हो जा रहा है जोकि हमारे लिए बहुत गर्व की बात है। न्यू केयर हॉस्पिटल दुमका के निदेशक हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉक्टर तुषार ज्योति को आयुष्मान भारत मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना द्वारा सम्मानित किया गया।

भीषण गर्मी में भी क्लास रूम में पंखा नहीं चलाने से बेहोश हो गई दो बच्चियां, अभिभावकों ने उपायुक्त को लिखा पत्र

झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

दुमका। होली चाइल्ड इंग्लिश मीडियम स्कूल अम्मा जोड़ा शिकारीपाड़ा में व्याप्त अनियमितता एवं प्रबंधन द्वारा छात्रों पर ध्यान नहीं देने सहित अन्य मांगों को लेकर गुरुवार को अभिभावकों ने उपायुक्त दुमका के नाम प्रखंड विकास पदाधिकारी शिकारीपाड़ा को एक आवेदन समर्पित किया।आवेदन प्राप्त होते ही प्रखंड विकास पदाधिकारी संतोष कुमार चौधरी ने अपने स्तर से प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी को जांच रिपोर्ट समर्पित करने का निर्देश दिया। बताते चलें कि गुरुवार को भीषण गर्मी के बावजूद विधालय प्रबंधन द्वारा क्लास रूम में पंखा नहीं चलाने के कारण दो छात्राएं नीसी प्रिया साहा एवं आयुसी कुमारी क्लास में ही बेहोश हो गई। जिसकी सूचना उनके अभिभावकों को विद्यालय द्वारा दी गईसूचना प्राप्त होते ही अभिभावक अपनी अपनी दोनों बच्चियों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र शिकारीपाड़ा लाए,जहां आयुष चिकित्सक मिथिलेश कुमार ने दोनों बच्चियों की जांच कर उपचार किया। चिकित्सक के अनुसार अत्यधिक गर्मी के कारण दोनों बच्चियां बे-होश हुई थीप्राथमिक उपचार के बाद बच्चियों को घर भेज दिया गया।घटना से आक्रोशित अभिभावको रंजन कुमार साहा, हेमंत कुमार साहा,चंदन कुमार साहा, प्रभात कुमार,जयंत कुमार पाल सहित समेत अन्य अभिभावकों ने उपायुक्त दुमका के नाम एक शिकायत पत्र प्रखंड विकास पदाधिकारी को समर्पित किया। जिस पर प्रखंड विकास पदाधिकारी संतोष कुमार चौधरी ने कहा कि मैंने प्राप्त शिकायत की जांच प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी को करने का निर्देश दे दिया है.

सिदो कान्हु मुर्मू विवि के रजिस्ट्रार डॉ. संजय कुमार सिन्हा को मिला राजभवन से दो माह का सेवा विस्तार

झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

दुमका। सिदो कान्हु मुर्मू विश्वविद्यालय दुमका के वर्तमान रजिस्ट्रार डॉ. संजय कुमार सिन्हा को राज भवन से दो माह का सेवा विस्तार दे दिया गया है. इस बाबत झारखण्ड राज्य के राज्यपाल सह कुलाधिपति के आदेश से राजभवन ने चिट्ठी विश्वविद्यालय को भेज दिया है. उक्त चिट्ठी के आलोक में विश्वविद्यालय ने 5 जुलाई को अधिसूचना जारी कर दिया है. भेजे गये आदेश के अनुसार विश्वविद्यालय के वर्तमान रजिस्ट्रार डॉ. संजय कुमार सिन्हा को दिनांक 7 जुलाई से दो माह के लिए सेवा विस्तार दिया गया है. बताते चले डॉ. सिन्हा विश्वविद्यालय के बॉटनी विभाग के सह प्राध्यापक है और विगत 2 वर्षों से विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार के पद पर कार्यरत हैं. इनसे पूर्व भी उन्हें राजभवन से 1 वर्ष का सेवा विस्तार मिला था, जिसका कार्यकाल 6 जुलाई को समाप्त हो रहा था और अब एक बार पुन उन्हें 2 माह का सेवा विस्तार दिया गया है.

झामुमो ने जलाया भाजपा का पुतला

झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

दुमका। भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता द्वारा मध्यप्रदेश के सीधी में आदिवासी युवक के साथ किया गया कुकृत्य भारतीय जनता पार्टी के चाल, चरित्र और चेहरे को उजागर करता हैं। भारतीय जनता पार्टी के उक्त मानसिकता के खिलाफ स्थानीय सिदो-कान्हू चौक(पोखरा चौक) दुमका में भारतीय जनता पार्टी का पुतला दहन कर उसके चाल, चरित्र और मानसिकता को उजागर किया गया। इस मौके पर झामुमो के जिला सचिव शिव कुमार बास्की, केन्द्रीय समिति सदस्य अब्दुस सलाम अंसारी, नगर प्रभारी रवि यादव, जॉन सोरेन, जिला परिषद सदस्य प्रकाश हांसदा, प्रखण्ड अध्यक्ष सिराजउद्दीन अंसारी, प्रखण्ड सचिव विजय मल्लाह, बासु टुडू, शिबू चक्रवर्ती, शबनम खातून, इंदु चौबे, सुमंत यादव, पराक्रम शर्मा, सुनीता मरांडी, कृष्णा देवी, पेंटल दा, मो. गुलाम मुस्तफा, साकेत कुमार गुप्ता, जयदेव दत्ता, शान सिंह राजपूत, निप्पू अंसारी, मधु अली खान, अनिमेष साहा, गीता देवी, गौरव झा, रेखा दास, राजेश मुर्मू, राजेश चौरसिया, मनोज रजक, पियूष कुमार, बबलू सोरेन, मिलन कुमार, नजीम शेख, मो. पप्पू, अकरम, अनवर, मो. फारूख, बंटी कुमार, सूरज, रीता टोप्पो समेत सैकड़ों झामुमो कार्यकर्ता उपस्थित थे।

श्रद्धालुओं को सुलभ सुरक्षित जलार्पण कराने हेतु देवघर पुलिस कर्तव्यबद्ध है

- **विश्वव्यापी श्रावणी मेला 2023 में देवघर पुलिस लगातार कार्य व्यवस्था को और बेहतर बनाने के लिए प्रयतनशील है**

देवघर/झारखंड देखो/प्रतिनिधि। आज दिनांक 06.07.2023 को अहले सुबह श्रद्धालुओं के जयकारों से मंदिर प्रांगण गूँजयमान हो गया, श्रद्धालुओं को सुलभ सुरक्षित जलार्पण कराने हेतु देवघर पुलिस कर्तव्यबद्ध है, और हर संभव प्रयास के लिए तत्पर है ऐसे में सुभाष चंद्र जाट, पुलिस अधीक्षक, देवघर, के विजयशंकर, पुलिस अधीक्षक नगर,जमशेदपुर व पवन कुमार अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, देवघर द्वारा मंदिर में कावरियों के रूट लाइन का निरीक्षण कर पुलिस पदाधिकारियों/कर्मियों को इस संदर्भ उचित दिशा निर्देश दिया गया।

अदाणी फॉउंडेशन ने अच्छी फसल के लिए किसानों के बीच किया खाद का वितरण

झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

बड़कागांव/अदाणी फॉउंडेशन ने गोंदलपुरा खनन परियोजना के तहत गुरुवार को ग्रामीणों के बीच विभिन्न प्रकार के खाद का वितरण किया। बड़कागांव स्थित कार्यालय परिसर में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान प्रखंड के गाली, बलोदर और गोंदलपुरा के ग्रामीणों को 50 किलोग्राम डीएपी खाद, 50 किलोग्राम यूरिया और दस किलोग्राम धान का बीज प्रदान किया गया। इस अवसर पर करीब 35 से अधिक किसान मौजूद थे। कार्यक्रम में किसानों को बताया गया कि खाद और दवाओं के सही प्रयोग करने से अच्छी फसल मिलेगी। डीएपी खाद पौधों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। साथ ही यह तिलहन और दलहन फसलों के लिए अत्यधिक उपयुक्त है। पौधों के पोषक तत्वों के लिए भी यह अत्यधिक उपयोगी माना जाता है। खाद के उपयोग से मिट्टी में वायु संचार बढ़ने के साथ-साथ मिट्टी के जल सोखने की क्षमता भी बढ़ती है। पौधों की जड़ों का विकास अच्छा होता है। खाद और बेहतर खेती के टिप्स पाकर सभी किसान बेहद खुश नजर आए। किसानों ने अदाणी फॉउंडेशन का आभार जताते हुए कहा कि लगातार फॉउंडेशन की ओर से सीएसआर के तहत कार्यों का निष्पादन किया जा रहा है, जो स्वागत योग्य है।

- **इलाके में लगातार जारी है विभिन्न प्रकार की गतिविधियां**

अदाणी फॉउंडेशन की ओर से बड़कागांव प्रखंड के विभिन्न गावों में लगातार सामाजिक दायित्वों का निर्वहन जारी है। फॉउंडेशन ने हाल ही में सात विद्यार्थियों के बीच निःशुल्क साइकल का वितरण किया। इसके साथ ही 70 टीबी के नए मरीजों को गोद लिया गया है। पहले गोद लिए गए 60 टीबी मरीजों में अधिकतर स्वस्थ हो चुके हैं। फॉउंडेशन ने हाल ही में 39 मरीजों के आंखों की निशुल्क जांच करवा कर उनके बीच निशुल्क चश्मे का वितरण किया, जिससे उनके देखने की समस्या दूर हो गयी। इसके अलावा अदाणी फॉउंडेशन की ओर से गावों में निःशुल्क हेल्थ कैम्प लगाए जा रहे हैं, जहां लोगों को दवाइयां और उचित परामर्श दिया जाता है। आने वाले दिनों में अदाणी फॉउंडेशन की ओर सीएसआर के तहत और भी कई कार्य किए जाएंगे, जिससे ग्रामीणों का जीवन और सुगम होगा।

- **कार्यक्रम में ये रहे मौजूद**

किसानों के बीच खाद वितरण कार्यक्रम के अवसर पर परियोजना प्रमुख धर्मेंद्र दूबे, डीजीएम संजय कुमार, सेवानिवृत डीएसपी सूर्य कुमार सिंह, सीएसआर प्रबंधक मोहित गुप्ता, शरद मिश्रा, उप प्रबंधक संतोष तिवारी और चेतन साई समेत बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे।

हरियाणा के ट्रक चालक की बोकारो में मौत

बोकारो। बोकारो, जिला अंतर्गत बनगडिया ओपी अंतर्गत जीसी एस तेलगाड़िया कोल पर्वतपुर लक्ष्य पावर प्लांट में एक ड्राइवर की मृत्यु हो गई।मृतक का नाम सौरभ खान फिरोजपुर हरियाणा का रहने वाला था अपने गाड़ी पर गाड़ी संख्या एच आर 382-3057 पर बाहर से पर्वतपुर लक्ष्य पावर प्लांट में समान लेकर आया था। बीते रात को अपने खलासी के संग खाना खा कर अपने गाड़ी में ही सो गया सुबह जब उठा तब चालक गाड़ी में सोया का सोया ही रहा, गाड़ी का खलासी ने बताया कि कंटेनर पर हम लोग कंपनी के लिए डब्बा लेकर आए थे और हम लोग खाना खाकर सोने चले गए सुबह उठे तो देखें कि ड्राइवर सोया के सोया रह गया उसे उठाने का बहुत प्रयास किया गया लेकिन उठ नहीं सका जिसके बाद अन्य ड्राइवरों और प्लांट कर्मियों के सहयोग से सदर अस्पताल लाया गया जहां डॉक्टरों ने जाँच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया।

जिसकी सूचना सिटी थाना को दिया गया है। मौके पर पहुंचे सिटी थाना के एस आई रोहित ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है मौत के कारणों का खुलासा पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद ही हो सकता है। तत्काल परिजनों को सूचना भेज दी गई है।

स्कूल भवन की जर्जर छत गिरने से बाल बाल बचे बच्चे

निरसा/झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

एग्यारकुंड प्रखंड क्षेत्र के निरसा शैक्षणिक अंचल दो के प्राथमिक विद्यालय गोपीनाथपुर स्कूल का जर्जर छत गुरुवार को भरभराकर गिर गया। शिक्षक और बच्चे बाल बाल बच गए। घटना के वक्त कक्षा शुरु नहीं हुई थी। कक्षा के दौरान यदि घटना होती तो एक बड़ी हादसा से इनकार नहीं किया जा सकता था। कोई अप्रिय घटना न हो इसको लेकर स्कूल के शिक्षक द्वारा विभाग को बार-बार सूचना और लिखित शिकायत देने के बावजूद भी विद्यालय के जर्जर भवन पर किसी तरह की कार्रवाई नहीं की गई। भवन निर्माण को लेकर विभाग ने दिलचस्प नहीं दिखाई और न ही इस ओर से कुछ भी सकारात्मक पहल नहीं की गई। जर्जर छत की वजह से दहशत और भय के माहौल में बच्चे अध्ययन करने को विवश हैं। शिक्षक भी अपने आप को असुरक्षित महसूस कर रहे हैं। विद्यालय प्रबंधन समिति ने भी अनहोनी होने की आशंका जताई। बावजूद किसी भी तरह की कार्रवाई नहीं की गई। जिससे विद्यालय परिवार संकट में है।

न्यायालय के आदेश पर पुलिस ने चिपकाया नोटिस

चास। चास पुलिस ने अदालत के आदेश का अनुपालन करते हुए चास थाना क्षेत्र के कृष्णा नगर कॉलोनी निवासी राजू चौरसिया के मकान पर अदालत के आदेश का नोटिस चस्पा किया है।गौरतलब है कि मामला संख्या 590/2018 मामले में आरोपी राजू चौरसिया अदालत में उपस्तिथ नही हुए है। इस आदेश में अदालत ने आरोपी को अबिलम्ब अदालत में उपस्तिथ होने की ताकीद की है।नोटिस चस्पा करने आये पुलिस अधिकारी ने जानकारी देते हुए बताया कि अदालत के आदेश पर आज आरोपी के घर पर नोटिस चस्पा किया गया है, अगर इसके बाद भी आरोपी अदालत में उपस्तिथ नही होते है तो अदालत के आदेश पर कुर्की जप्ती या कोई अन्य कार्यवायी जो भी अदालत निर्देशित करेगी वह कार्यवायी की जाएगी।

क्षणिकाएँ

1.
वो ,
उज्जवल भविष्य को,
उन्नत भारत को,
'विश्वगुरु' को,
शिक्षा- संस्कार पर,
विशेष ध्यान दे रहे है;
इसलिए,
स्कूलों में,
तकनीकी संस्थानों में,
ऊँची फीस ले रहे है ।

2.
वो,
बाल श्रम को,
अनैतिक,
शोषण- भरा,
गैर- कानूनी व्यवहार बताते है;
जबकि,
सच्चाई है कि,
मौका मिलते ही,
सुविधा देखते ही,
घर, होटल, मंत्रालय, दफ्तर,
काम लेते तनिक नही लजाते है ।

3.
वो,
नैतिकता का ,
पूरजोर पालन करते है,
जन-समर्थन करते है,
उतना ही अधिक ,
नैतिक मूल्यों का सम्मान करते है;
इतना कि,
खाकर कसमें,
निभाकर झूठी रश्में,
अब भी,
घपले, घोटाले ,लूट, बेईमानी के,
इरादों से,
बातों से,
व्यवहारों से इतर,
विचलित राह नही चलते है।

4.
वो,
महिलाओं के प्रति,
बढ़ते जुल्मोंसितम से,
घृणित अपराधों से,
दुष्कर्म व्यवहारों से,
चिंतित है,
शर्मिंदा है,
दिखते भी अति संवेदनशील है;
इतना कि,
अपराधियों को बचाने को
दुष्वारियों को छुपाने को,
साक्ष्य को मिटाने को,
मामला दबाने को,
गुनाहों पर पर्दा डालने को,
मामला रफ़ा- दफ़ा करने को,
जिद्द से हटाने को,
मीडिया से बचाने को,
तत्पर दिखते यहाँ,
नेता, पुलिस व वकील है ।

प्रस्तुति

डॉ विनोद कुमार शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर
(नैदानिक मनोवैज्ञानिक)
स्नातकोत्तर मनोविज्ञान विभाग,
सिकामु विवि, दुमका ।

मंत्री जोबा मांझी माननीय ने परियोजना बालिका उच्च विद्यालय कोडरमा एवं आंगनबाडी केन्द्रों का किया भ्रमण

कोडरमा/झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

माननीय मंत्री द्वारा ओपन जिम का उद्घाटन किया गया

महिला बाल विकास एवं सामाजिक सुरक्षा विभाग मंत्री जोबा मांझी द्वारा परियोजना बालिका उच्च विद्यालय कोडरमा का भ्रमण किया गया। विद्यालय के बच्चियों द्वारा माननीय मंत्री का स्वागत किया और अंसेबली में लाया गया। माननीय मंत्री ने विद्यालय के अंसेबली में भाग लिया और उन्होंने अंसेबली में बच्चियों द्वारा की ज रही क्रियाकलाप यथा संविधान को पढ़ाना, आज का सुविचार, आज प्रेरणादायक कहानी, हिंदी इंग्लिश मीनिंग इत्यादि को देखा और वे अंसेबली की प्रशंसा की। माननीय मंत्री ने बच्चियों को संबोधित करते हुए कहा कि जिला प्रशासन द्वारा शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए जो कार्य किया गया वह सराहनीय है और ये आपके उज्जवल भविष्य को तैयार करता है। उन्होंने कहा कि लक्ष्य को लेकर चलें और निरंतर आगे बढ़ते रहे। उपायुक्त कोडरमा और विद्यालय के शिक्षकों के बेहतर विचार को अब सभी विद्यार्थी अपनायें और आगे बढ़ने को ठान लें। अपने भविष्य को उज्जवल बनायें। इस क्रम में विद्यालय के बच्चियों द्वारा स्कूल का भ्रमण कराया गया। विद्यालय की बच्चियों और प्रधानाचार्य स्कूल की व्यवस्थाओं के बारे में जानकारी दी। माननीय मंत्री को विद्यालय में पुस्तकालय, प्रयोगशाला, खेलकूद रूम, सीक रुम दिखाया गया। इसके अलावा स्मार्ट क्लास की जानकारी दी गई । इसके साथ स्कूल में गठित हाउस की जानकारी दी और किचन गार्डन को भी दिखाया गया। बच्चियों ने विद्यालय में प्रोजेक्ट रेल और प्रोजेक्ट इंपैक्ट के बारे में जानकारी दी और कहा कि प्रोजेक्ट रेल के माध्यम से लगातार विभिन्न विषयों का साप्ताहिक टेस्ट होता रहा , जिससे हमलोग 10वीं और 12वीं की परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन कर सके। माननीय मंत्री ने विद्यालय की सुविधाओ को देखकर बहुत खुश हुई।

वहीं मंत्री जोबा मांझी, ने बलरोटांड, सलईडीह, नावाडीह, झरीटांड इंदरवा, हुसैनाबाद एवं सिंग्लोडीह आंगनबाडी केन्द्रों का भ्रमण किया गया। आंगनबाडी केन्द्र बलरोटांड में सेविका द्वारा टीएलएम के माध्यम से केन्द्र में होने वाले गतिविधियों की जानकारी दी गई और बच्चों के द्वारा बनाये गये वस्तुओं को दिखाया गया। माननीय मंत्री आंगनबाड़ी केन्द्र के सुविधाओं को देखकर काफी प्रसन्न हुई और कहा कि उपायुक्त महोदय के प्रयास से बच्चे काफी समझदार बन रहें है। उनके द्वारा की गई गतिविधि ने मन को मोह लिया है । इसके साथ हीं उन्होंने पोषण वाटिका का भी भ्रमण किया। पोषण वाटिका में हरे-भरे साग-सब्जियां देकर काफी प्रसन्न हुईं। इस मौके पर माननीय विधायक डॉ नीरा यादव, उपायुक्त आदित्य रंजन, उप विकास आयुक्त ऋतुराज, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी आरती कुमारी व अन्य मौजूद थे।

हिन्दी दैनिक
झारखण्ड देखो
खबरें, कहानी, लोग और बहुत कुछ

संक्षिप्त समाचार

सांसद संजय सेठ युवा उपाध्यक्ष के घर पहुंचे, परिजनों से मिले

ईचागढ़। सरायकेला खरसावां जिला के ईचागढ़ प्रखंड निवासी भारतीय जनता युवा मोर्चा सरायकेला खरसावां के जिला उपाध्यक्ष मनोरंजन महतो के घर उनके परिजनों व पिताजी से मुलाकात करने के लिए रांची लोकसभा के सांसद संजय सेठ गुरुवार को पहुंचे । सांसद श्री सेठ भाजपा युवा मोर्चा के जिला उपाध्यक्ष मनोरंजन महतो के पिताजी को अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया। उन्होंने उनका कुशल क्षेम भी जाना। । सांसद ने अपने समर्थकों के साथ संगठन के संबंध में भी चर्चा किया। सांसद ने कहा कि भाजपा कार्यकर्ताओं का पार्टी है। भाजपा हमेशा से ही कार्यकर्ताओं का हर सुख दुःख में भागीदारी रखता है। मौके पर ईचागढ़ विधानसभा के पूर्व विधायक स्वर्गीय साधु चरण महतो जी के धर्मपत्नी भाजपा नेत्री सारथी महतो , नीमडीह के पूर्व जिला परिषद सदस्य अनीता पारित , ईचागढ़ विधान सभा के सांसद प्रतिनिधि मदन सिंह सरदार , बलराम महतो , अनिल सिन्हा , राजेंद्र सिंह मुंडा , शिशिर प्रमाणिक , सोनारी के मंडल अध्यक्ष प्रशांत पोद्दार , दिवाकर सिंह ,नकुल गोराई ,बिमल महतो , सुशेन गोप , यदुपति गोप , धीरज महतो एवं भारतीय जनता पार्टी के सम्मानित कार्यकर्ता उपस्थित थे ।

गरीब बच्चों की शिक्षा के लिए बेहतरीन कार्य कर रहा है आसस विद्यालय

बोकारो। शहर के सेक्टर 12 स्थित आसस विद्यालय का 27वां स्थापना दिवस गुरुवार को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मुख्य अतिथि यूसीएसएल के सचिव विजय विक्रम सिंह, उपाध्यक्ष राजीव रंजन, सदस्य अमरनाथ झा एवं अधिवक्ता विकास कुमार सिंह ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। तत्पश्चात विद्यालय के संस्थापक योगो पूर्ति ने अतिथियों का स्वागत पुष्प गुच्छ देकर किया। इस दौरान संस्थापक श्री पुर्ति ने विद्यालय के उपलब्धियां की जानकारी दी। मुख्य अतिथि श्री सिंह ने कहा कि गरीब बच्चों की शिक्षा के लिए आसस विद्यालय बेहतरीन कार्य कर रहा है। क्योंकि गरीब बच्चों को शिक्षा देने से बड़ा कोई पुण्य नहीं है। उन्होंने कहा कि हमें इस प्रकार के कार्यों से प्रेरणा लेनी चाहिए। साथ ही समाज एवं गरीब बच्चों के शिक्षा में सहयोग करने के लिए आगे आना चाहिए। वहीं अतिथियों द्वारा 2022-23 सत्र नर्सरी से आठवीं तक वार्षिक परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन रेंगों बिरुवा ने किया। मौके पर अधिवक्ता रंजीत गिरी, अंतरराष्ट्रीय चित्रकार रंजीत कुमार, शिक्षक चित्रेश कुमार, संजय कुमार, अलका मुर्मू, करण कुमार, चंद्रकांत पूर्ति, सरोज बाला सहित अन्य उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री सारथी योजना के तहत कौशल जागरूकता कार्यक्रम

डुमरी। प्रखंड सह अंचल कार्यालय सभागार में गुरूवार को मुख्यमंत्री सारथी योजना के अन्तर्गत कौशल जागरूकता कार्यक्रम सह कौशल महोत्सव का आयोजन जिला प्रशासन द्वारा किया गया।प्रशिक्षण कार्यक्रम में मुख्य रूप से डिस्ट्रिक्ट स्कील ऑफिसर रवि शंकर महात्मा गांधी नेशनल

फेलो नितेश केरकेट्टा लेबर इंफोर्समेंट ऑफिसर देव कुमार मिश्रा यूएनओपी के प्रोजेक्ट एसोसिएट नवलेश निहार प्रमुख उषा देवी,बीडीओ डुमरी सोमनाथ बंकिरा सीओ धनंजय गुप्ता उपस्थित हुए।सभी ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की।डिस्ट्रिक्ट स्किल ऑफिसर रवि शंकर ने योजना के अन्तर्गत संचालित विभिन्न ट्रेडों के प्रशिक्षण की जानकारी दिया और उपस्थित युवक युवतियों से योजना से लाभान्वित होने की अपील की।वहीं लेबर इंफोर्समेंट ऑफिसर देव कुमार मिश्रा ने योजना के तहत प्रशिक्षण प्राप्त करके युवक युवतियां स्वरोजगार से जुड़ स्वावलम्बी बन सकते हैं। साथ ही सरकारी एवं निजी क्षेत्रों में नौकरी पा सकते हैं।बीडीओ सोमनाथ बंकिरा ने उपस्थित युवक युवतियों से कहा कि कौशल विकास से प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद रोजगार के कई अवसर उपलब्ध हैं। जबकि सीओ धनंजय गुप्ता ने कहा कि युवाओं को बड़े पैमाने पर प्रशिक्षण देने की जरूरत है, क्योंकि जिस तरह आज शिक्षित बेरोजगारों की संख्या बढ़ती जा रही है, उसके अनुरूप ट्रेडों की संख्या में वृद्धि कर अधिक से अधिक बालिग युवक युवतियों को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है। वहीं प्रमुख उषा देवी ने कहा कि सरकार युवाओं को हुनरमंद बनाने के लिए कौशल विकास के तहत कई कार्यक्रम चला रही है।इस दौरान मुखिया रीना कुमारी,परमेश्वर तुरी,रेणु देवी आदि सहित युवक युवतियां उपस्थित थे।

लोकसभा चुनाव 2024 : चतरा में शिक्षा चुनावी मुद्दा क्यों नहीं?

झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

चतरा। वर्तमान लोकसभा का कार्यकाल 16 जून 2024 को समाप्त होने वाला है। पिछले आम चुनाव अप्रैल-मई 2019 में हुए थे। मई 2024 या इससे पहले 18 वीं लोकसभा के सदस्यों का चुनाव करने के लिए निर्धारित है। चुनाव तैयारी सभी राजनीतिक दलों की ओर से शुरू हो गई है। विपक्षी एकजुटता की बात हो रही है। बीजेपी को घेरने की रणनीति तैयार की जा रही है। चुनावी मुद्दों को धार दी जा रही है। हर राजनीतिक दल संभावित उम्मीदवारों की खोज कर रहा है। सर्वे और समीकरणों के जरिये मुद्दों और जनता का मूड भांपने का प्रयास किया जा रहा है।

झारखण्ड का चतरा लोक सभा क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। पिछले दो बार (2014 /2019) से क्षेत्र का प्रनिधित्व भाजपा से सांसद सुनील कुमार सिंह कर रहे है। चुनावी मुद्दों की बात करें तो रेल, कोयला, विस्थापन, रोजगार, बिजली, सड़क, पानी, सुखाड़ और डैम निर्माण चुनावी मुद्दे बनते रहे हैं। राजनीतिक दल और प्रत्याशी इन्हीं मुद्दों के इर्द गिर्द अपनी रणनीति बनाकर जातीय और धार्मिक ध्रुवीकरण का सहारा लेकर चुनावी समर पार करते है। पिछले दो चुनाव प्रधान मंत्री मोदी के चेहरे और काम के आधार पर लड़े गए इसलिए मैनिफेस्टो और लोकल मुद्दों की बात बेमानी है।

देश की राजनीति पिछले दस वर्षों में जिस तरह से बदली है उसमें लोक सभा में चतरा के स्थानीय उम्मीदवार को प्रतिनिधित्व देने की पुरानी मांग भी प्रासंगिक नहीं रह गई।

चतरा झारखंड का सबसे छोटा संसदीय क्षेत्र है। जिले की साक्षरता दर 60.16% है। जिसमें पुरुष साक्षरता दर 69.92 व महिला साक्षरता दर 49.92 है।

- **चतरा जिले में उच्च शिक्षा की स्थिति :**

चतरा संसदीय क्षेत्र का एक मात्र सरकारी कॉलेज चतरा महाविद्यालय है। यहां दो विषयों में स्नातकोत्तर की पढाई हो रही है। पीजी में इतिहास व गणित विषय के अलावा वोकेशनल शिक्षा के नाम पर बीसीए और बीएड की पढ़ाई होती है। चतरा महाविद्यालय के प्रांगण में ही महिला महाविद्यालय भी संचालित हो रहा है। मॉडल कॉलेज भी संचालित हो रहा है।

युवाओं को तकनीकी शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए जिले मुख्यालय में एक पॉलिटेक्निक कॉलेज का भवन बन कर तैयार है। पॉलिटेक्निक की पढ़ाई अभी शुरू नहीं हो पायी है। जिले में महिला पॉलिटेक्निक कॉलेज और चतरा के हंटरगंज व प्रतापपुर प्रखंड में आईटीआई प्रशिक्षण संस्थान का निर्माण भी किया गया है। चतरा में मेडिकल कॉलेज की स्थापना को लेकर भूमि चयन की प्रक्रिया करीब-करीब पूरी कर ली गई है। अंचल कार्यालय ने जिला सदर अस्पताल के आसपास की जमीन को चिह्नित करते हुए मापी कर ली गई है। बहुत जल्द नक्शा के साथ जमीन का प्रस्ताव अपर समाहर्ता के माध्यम से उपायुक्त को सौंप दिया जाएगा। मेडिकल कॉलेज की स्थापना के लिए राज्य सरकार ने जिला प्रशासन से बीस एकड़ भू-खंड चिह्नित करते हुए प्रस्ताव मांगा है। जमीन का प्रस्ताव मिलने के बाद आगे की प्रक्रिया शुरू होगी। उल्लेखनीय है कि मेडिकल कॉलेज की यह प्रस्तावित योजना केंद्र सरकार की है। नीति आयोग ने आकांक्षी जिलों की स्वास्थ्य व्यवस्था में सुधार को लेकर मेडिकल कॉलेज की स्थापना सुझाव केंद्र सरकार को दिया था। केंद्र सरकार ने इस सुझाव को मानते हुए उसे अमल में लाने के लिए स्वास्थ्य मंत्रालय को निर्देश दिया गया था।

चतरा विधान सभा का प्रतिनिधित्व श्रम नियोजन, प्रशिक्षण एवं कौशल विभाग के मंत्री सत्यानंद भोगता कर रहे है। वर्तमान सांसद सुनील सिंह केंद्र सरकार की योजनाओं के जरिए क्षेत्र के विकास का दावा करते रहे है। वहीं दूसरी तरफ़ हेमंत सोरेन सरकार पर केंद्र प्रायोजित योजनाओं को लागू करने में देर करने का भी आरोप गठित करते है।

चतरा जिले की पहचान पिछले कुछ वर्षों में बदली है। नक्सल वाद के बाद अब जिले का टंडवा प्रखंड औद्योगिक नगरी के नाम से जाना जाने लगा है। जिले में रेल परियोजना का प्रारंभ होना, सीसीएल के द्वारा कोयला उत्खनन , एनटीपीसी के पावर प्लांट के प्रारंभ होने से सामाजिक, अर्थिक और राजनीतिक प्राथमिकताएं बदली है । बावजूद इसके अभी भी स्वास्थ्य, शिक्षा और रोजगार जैसे मुद्दे यथावत हैं।

स्कूली शिक्षा के नाम पर एक केंद्रीय विद्यालय और एक नवोदय विद्यालय जिले में चलाया जा रहा है लेकिन विद्यालय शिक्षा में अभी भी काफी कुछ किया जाना बाकी है।

- **शिक्षा चुनावी मुद्दा क्यों नहीं:**

चुनावी मौसम में हर राजनीतिक दल अपने घोषणा पत्र में बहुतेरे वादे करता है। लेकिन देश के लोक सभा और विधान सभा के चुनाव शिक्षा जैसे विषय पर क्यों नहीं लड़े जाते।

देश में शिक्षा का अधिकार कानून लागू है। नई शिक्षा नीति का क्रियान्वयन त्वरित गति से हो रहा है। स्कूली शिक्षा के साथ विश्विद्यालय की शिक्षा, पाठयक्रम और परीक्षा पद्धति में बड़े बदलाव देखने को मिल रहे है क्या यह चुनावी मुद्दे नहीं हैं।

क्यों चुनावों में शिक्षा चुनावी मुद्दा नहीं बन पाता? राजनीतिक दल शिक्षा और उससे जुड़े मुद्दों पर चुनाव क्यों नहीं लड़ते ? चुनावी मैनिफेस्टो, प्रचार और चुनावी सभा में शिक्षा पर आक्रामक रूप से दोनों पक्ष बात क्यों नहीं करते? क्या वाकई शिक्षा कोई चुनावी मुद्दा नहीं है ? या यह वोटर को इतना आकर्षित नहीं करता जितना धर्म और जातीय पहचान से जुड़े मुद्दे ? शायद चुनावी दल भी यह मान कर चलते है कि शिक्षा और उससे जुड़े मुद्दे पर वोटर वोट नहीं करता है। चुनावी प्रचार, सभा, रैलियां और भाषण में मोदी, कांग्रेस, भारत, पाकिस्तान, श्मशान और कब्रिस्तान, सेना, शौर्य, पराक्रम और धर्म जैसे शब्द धडल्ले से इस्तेमाल होते है उस तर्ज पर शिक्षा से जुड़े मुद्दे नजरअंदाज क्यों किये जाते रहे हैं।

बड़ा सवाल यही है कि सभी दल शिक्षा को लेकर अपनी भावी योजनाओं से देश के मतदाताओं को अवगत क्यों नहीं करा देते? उन्हें ये सब करने में डर क्यों लगता है? आजादी के 73 साल बाद भी चुनाव में भी शिक्षा के मुद्दे पर बहस का न होना हमारी शिक्षा को लेकर पिलपिली राजनीतिक मानसिकता को ही दर्शाता है।

झारखंड में अभी 16 प्राइवेट यूनिवर्सिटी, 11राज्य विश्वविद्यालय, 1केंद्रीय विश्वविद्यालय 1 डीम्ड यूनिवर्सिटी और 1 खुला विश्वविद्यालय संचालित है। लेकिन एक भी प्राइवेट यूनिवर्सिटी ने चतरा जिले में अपना कैंपस खोलने के लिए राज्य सरकार को आवेदन नहीं दिया है।

स्कूली शिक्षा में भी कोई बड़ा नाम जिले में अपना केंद्र स्थापित नहीं करना चाहता। विधि, चिकित्सा और अभियंत्रण के क्षेत्र में भी पॉलिटेक्निक के ऊपर सोचने की क्षमता राज्य और केंद्र की राजनीति करने वाले नेताओं की समझ से परे है।

2024 के लोक सभा चुनाव में शिक्षा चुनावी मुद्दा बनता है या नहीं यह कुछ महीनों में स्पष्ट होगा। सवाल यह है कि मतदाता शिक्षा और उससे जुड़े मुद्दे पर वोट कर सकता है क्या?

बिरसा सिंचाई कूप संवर्धन योजना को प्राथमिकता के आधार पर शत-प्रतिशत पूरा करें: डीसी श्री इमरान

561 प्रधानमंत्री आवास लंबित रहने पर डीसी श्री इमरान ने जताई नाराजगी, 31 जुलाई तक पूरा करने को कहा

चतरा/झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

डीसी अबु इमरान चतरा प्रखंड सह अंचल कार्यालय सभागार में बैठक की बैठक। बैठक में प्र-खंड स्तर पर संचालित योजनाओं की समीक्षा की गयी। समीक्षा के दौरान डीसी ने चतरा प्रखंड अंतर्गत 561 प्रधानमंत्री आवास लंबित रहने पर नाराजगी व्यक्त की। सभी लंबित 561 प्रधानमंत्री आवास योजना को 31 जुलाई तक पूरा करने को कहा।

बैठक में डीसी श्री इमरान ने प्रखंड एवं अंचल कार्यालय में कर्मियों की उपस्थिति, लंबित मामले, प्रधानमंत्री आवास योजना, बिरसा सिंचाई कूप विकास योजना, मनरेगा कार्य में अनुसूचित जनजाति/अनुसूचित जाति की महिलाओं की भागीदारी,

वीर शहीद पोटो हो खेल पर चर्चा की। विकास योजना., अंबेडकर आवास, जेएसएलपीएस के तहत संचालित योजना, फूलो झानोन योजना, प्लास ब्रांड, दाखिल खारिज, जाति आवासीय समेत अन्य संचालित योजनाओं की समीक्षा की गयी।

समीक्षा के दौरान डीसी श्री इमरान ने कहा कि बिरसा सिंचाई कूप विकास योजना राज्य की महत्वाकांक्षी योजना है। इस योजना के शत-प्रतिशत लक्ष्यों को प्राथमिकता के आधार पर प्राप्त करें। मनरेगा योजना के तहत प्रत्येक पंचायत में 5 योजनाएं संचालित करने का निर्देश दिया गया। पोटो हो खेल का मैदान शत प्रतिशत पूर्ण करें।

प्रधानमंत्री आवास योजना की समीक्षा के दौरान प्रखंड विकास पदाधिकारी गणेश रजक ने कहा कि 561 प्रधानमंत्री आवास योजना प्रखंड स्तर पर लंबित है। इसको लेकर उपायुक्त ने नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा कि आवास योजना का लंबित रहना अशोभनीय है। प्रधानमंत्री आवास योजना के सभी लंबित 561 कार्यों को 31 जुलाई तक पूरा करें। बैठक में 12 अंबेडकर आवास लंबित पाये गये। उन्होंने लंबित रहने के कारण की जानकारी लेते हुए एक माह के अंदर नियमानुसार कार्य पूरा करने का निर्देश दिया। वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए अंबेडकर आवास की शत-प्रतिशत स्वीकृति देकर सभी योग्य लाभुकों को लाभान्वित करने का निर्देश दिया। जेएसएलपीएस के तहत संचालित योजनाओं की समीक्षा करते हुए फुलो झानो आशीर्वाद योजना की स्वीकृति बढ़ाने और प्लास ब्रांड सामग्री की खरीद-बिक्री करने का निर्देश दिया। पंचायत की लंबित योजना की शत-प्रतिशत प्रविष्टि ई-ग्राम स्वराज पोर्टल पर 2 दिनों के अंदर करें. अंचल की समीक्षा के क्रम में दाखिल खारिज, लंबित जाति/आवासीय प्रमाण पत्र समेत अन्य की भी समीक्षा की गयी।

बैठक में अपर समाहर्ता पवन कुमार मंडल, डीआरडीए निदेशक अरुण कुमार एक्का, अनुमंडल पदाधिकारी चतरा मुमताज अंसारी, जिला आपूर्ति पदाधिकारी सलमान जफर खिजरी, प्र-खंड विकास पदाधिकारी गणेश रजक, परियोजना पदाधिकारी रूपेश तिवारी, अनुजा राणा, प्र-खंड स्तरीय पदाधिकारी एवं अन्य संबंधित कर्मी उपस्थित थे।

ड्रीम इलेवन से मजदूर के बेटे की रातों-रात बदली किस्मत, जीते चार लाख

गायघाट। आपने अक्सर सुना होगा कुछ लोग रातों रात करोड़पति एवं लाखपति म बन जाते है. जी हां एक ऐसा ही मामला सामने आया है। मुजफ्फरपुर जिले के गायघाट प्रखंड के गांव शिवदाहा से. इस गांव के निवासी बिदेशी राम ड्रीम 11 एप के जरिए चार लाख रुपये जीतकर रातों रात लाखपति पति बन गए हैं. वही विजेता बिदेशी राम का कहना है कि उसे क्रिकेट और इस खेल के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है. दूसरे लोगों को देखकर उन्होंन ये खेल खेलना शुरू किया ।बिदेशी राम ने कहा, ' बिदेशी मैचो में मैने टीम बनाकर ये इनाम जीता है'. इस जीत के बाद बिदेशी राम और उनके परिजन बेहद खुश हैं. वही इस विजेता युवक को ग्रामीणों ने बधाई एवं शुभकामनाएं दी है । बिदेशी राम ने बताया कि उसकी परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है और वह दरभंगा में मजदूरी करता है. इसी दौरान अन्य साथियों को 11 ड्रीम खेलता हुआ देखता था. उन्हें देखकर अभी यह खेल खेलना शुरू किया. उन्होंने कहा, 'पहली बार में मुझे हार मिली तो मन निराश हो गया. इस जीत के बाद में और मेरे परिजन बेहद खुश हैं।

एसएफसी गोदाम के पूर्व मजदूर बकाया मजदूरी व अन्य मानगो को लेकर समाहरणालय के समक्ष बैठे अनिश्चितकालीन अनशन पर

झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

कोडरमा/ समाहरणालय के समक्ष 5 जुलाई से अनिश्चितकालीन अनशन पर बैठे मजदूरो का गुरुवार को भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) ने समर्थन करते हुए जिला प्रशासन को पत्र दिया और सम्मानजनक वार्ता करते हुए अनशन तुड़वाने का आग्रह किया है। इस मौके पर सीपीएम के जिला सचिव असीम सरकार ने कहा की एसएफसी गोदाम में करीबन 20 वर्षों से कार्यरत मजदूर पिछले करीब 2 महीने से आंदोलनरत हैं। नए ठेकेदार आने के बाद विभाग द्वारा दिए गए रेट से कम दर पर मजदूरी भुगतान करने के कारण मजदूरों ने जब इसका विरोध किया और जब उचित मजदूरी की मांग की गई तो ठेकेदार के द्वारा जिला आपूर्ति पदाधिकारी को बुला लिया गया एवं जिला आपूर्ति पदाधिकारी आते ही मजदूरों को धमकी दिया गया और मजदूरों के खिलाफ में झुमरी तिलैया थाना में मुकदमा कर दिया गया। मजदूरों ने जब बकाया का भुगतान एंव विभाग द्वारा तय मजदूरी का भुगतान की मांग की तो मजदूरों को हटा के नए मजदूरों

को काम में लगा दिया गया। उन्होंने आगे कहा राइस मिल के मालिक बोलते हैं, जिला आपूर्ति पदाधिकारी बोलेंगे तो बकाया मजदूरी का भुगतान करेंगे। इस तरह से मजदुर और ठेकेदार की बींच की लड़ाई में जिला आपूर्ति पदाधिकारी का कूदना आश्चर्यजनक है। आगे उन्होंने कहा लगभग 20 परिवार भूख से मरने के कगार पर है, इसलिए जिला इकाई माकपा आंदोलन को समर्थन कर रही है और श्रम अधीक्षक, जिला आपूर्ति पदाधिकारी तथा जिला प्रशासन से मांग करती है कि इन मजदूरों के साथ सम्मानजनक वार्ता करते हुए अनशन को समाप्त करते हुए मजदूरों को विभाग द्वारा तय मजदूरी दिलाने की गारंटी करें, बकाया राशि की भुगतान की गारंटी करें अन्यथा वामदल एवं प्रगतिशील शक्तियों को लेकर जिला में आंदोलन शुरू किया जाएगा। इस मौके पर सीआईटीयु के नेता जिला संयोजक रमेश प्रजापति, फेकू लाल विद्यार्थी ,सरफराज अहमद, मकसूद आलम, कैलाश दास आदि सामिल थे।

- **क्या कहते है परिवहन अभिकर्ता**

वही इस पुरे मामले में राजेश कुमार थापा ने उपायुक्त को पत्र सौंप कर बताया है की मेरा डोर स्टेप डिलीवरी योजना के अंतर्गत परिवहन एवं हथालन कार्य हेतु तिलैया ब्लॉक स्थित झारखंड राज्य खाद्य निगम के गोदाम में मई 2023 से मार्च 2024 के लिए खाद्य एवं उपभोक्ता मामले निदेशालय झारखंड रांची के द्वारा निकाली गई निविदा में चयन हुआ हूँ। जिसमें उपायुक्त महोदय के कार्यालय के आपूर्ति शाखा द्वारा मुझे यह कार्य आदेश प्राप्त है, जिसमें यह स्पष्ट रूप से लिखा हुआ है, परिवहन के लिए वाहन की व्यवस्था एवं हथालन के लिए श्रमिक की व्यवस्था मुझे स्वयं करनी है ऐसे में जब मेरे द्वारा अपने श्रमिकों से कार्य कराने हेतु तिलैया ब्लॉक स्थित झारखंड राज्य खाद्य निगम के गोदाम में जाया गया, तो वहां के मौजूद मजदूर 1. मंतोष कुमार साव 2. गुड्डू कुमार 3 लालमोहन साव 4. देव लखन यादव 5. मनोज कुमार जो और भी ठेकेदारों का कार्य करते है और ठेकेदार द्वारा भेजे गए खाद्यान को खाली करना का उनके द्वारा विरोध किया जाता है। जिस कारण 22/5/2023 को जिला आपूर्ति पदाधिकारी द्वा-रा सरकारी कार्य में बाधा डालने मारपीट करने और गोदाम में बाजारण करने की प्राथमिकी दर्ज कराई थी। जिसमें मैं सरकारी गवाह बना हूं जिस कारण यह लोग दिनांक 15/6/2023 को इनके और इनके परिवार जिसमें बेवी देवी पति कुंदनशा जो 22/05/2023 में जिला आपूर्ति पदाधिकारी द्वारा किया गया प्राथमिकी में नामजद है। द्वारा मेरे साथ पुनः मारपीट, गाली गलौज किया गया एवं छेड़खानी के झूठे केस में फंसाने की धमकी भी दी गई, मेरे द्वारा लिखित आवेदन तिलैया थाना में दिया गया था। परंतु उसके बाद भी इन लोगों के द्वारा मुझे विभिन्न आदमियों से फोन पर धमका कर मुझे मानसिक रूप से परेशान किया जा रहा है, तथा भय

मंत्री जोबा मांझी की पूर्व जीप अध्यक्ष शालिनी गुप्ता के आवास पर हुई मुलाकात, बंद कमरे में हुई गुफ्तगू से क्षेत्र में चर्चाओ का बाज़ार गर्म

कोडरमा/झारखंड देखो/प्रतिनिधि।

मरकच्चो झारखंड सरकार की महिला, बाल विकास एवं सामाजिक सुरक्षा विभाग मंत्री जोबा मांझी क्षेत्र दौरे के दौरान गुरुवार को स्वावलंबी गांव लक्ष्मीपुर पहुंचकर झारखंड सरकार के द्वारा चलाए जा रहे कल्याणकारी योजनाओं का निरीक्षण किया। इसके पश्चात नवलशाही स्थित कोडरमा के पूर्व जिप अध्यक्ष शालिनी गुप्ता के आवास पहुंचकर औपचारिक मुलाकात की। वहीं पूर्व जिप अध्यक्ष ने मंत्री को पुष्पगुच्छ एवं शॉल ओढ़ाकर सम्मानित कर स्वागत किया। मंत्री जोबा मांझी ने मौजूद लोगों के बीच झारखंड मुक्ति मोर्चा की सराहना करते हुए लोगों से पार्टी को मजबूती देने की बात कही। वहीं मंत्री जोबा मांझी ने लोगों से कहा कि क्षेत्र भ्रमण के दौरान मिल रहे जन समस्याओ को मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन तक पहुंचा दिया जाएगा। इस दौरान पूर्व जिप अध्यक्ष शालिनी गुप्ता एवं मंत्री जोबा मांझी के बीच बंद कमरे में 10 मिनट तक चली गुफ्तगू से क्षेत्र में कई तरह के कयास लगाए जा रहे हैं। मौके पर जिला सचिव वीरेंद्र पांडे, केंद्रीय कमेटी सदस्य संजय पांडे, वरिष्ठ नेता साजिद हुसैन लल्लू, भीम साहू, आनंद कुमार आनंद, अल्पसंख्यक जिला अध्यक्ष खलील अंसारी, युवा मोर्चा सचिव सुधाकर यादव, जेएमएम जिला उपाध्यक्ष संजय साजन, सतगांवा महिला मोर्चा के प्रखंड अध्यक्ष ब्यूटी कुमारी, नाथू नारायण सिंह, पवन सिंह, शंकर साहू, इस्लाम अंसारी, सुजीत यादव, अशरफ अंसारी, चिंटू खान, पंकु साहू मोइन खान, संजय सिंह समेत पार्टि के कार्यकर्ता व ग्रामीण मौजूद थे।

11 जुलाई को रांची आएगी नीति आयोग की टीम

रांची, । नीति आयोग की टीम 11 जुलाई को झारखंड के दौरे पर आएगी और राज्य में चल रही केंद्रीय योजनाओं की समीक्षा करेगी। नीति आयोग के सदस्य डॉ विनोद कुमार पॉल के नेतृत्व में छह सदस्यीय टीम 12 जुलाई को 12.30 बजे प्रोजेक्ट भवन सभागार में राज्य के आला अधिकारियों के साथ बैठक करेगी।

इस टीम में वरीय सलाहकार नीरज सिन्हा, डॉ अशोक, ए सोनू सोनकुसरे, डॉ थ्यागराजू, नमन अग्रवाल और एसजी शिंदे शामिल हैं। दो दिवसीय इस दौरे में नीति आयोग की टीम के द्वारा केंद्र और राज्य सरकार के बीच समन्वय और योजनाओं को लेकर मंथन होगा। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से भी नीति आयोग की टीम के मिलने की संभावना है।

जानकारी के अनुसार नीति आयोग की टीम 11 जुलाई को शाम 7.30 बजे दिल्ली से रांची पहुंचेगी। राज्य सरकार ने झारखंड भवन पर आ रहे डॉ विनोद कुमार पाल सहित सभी नीति आयोग के सदस्यों को राजकीय अतिथि घोषित किया है। झारखंड मंत्रालय में 12 जुलाई को 12:30 बजे होने वाली समीक्षा बैठक के दौरान राज्य के मुख्य सचिव सुखदेव सिंह सहित सभी अधिकारी मौजूद रहेंगे। इस बैठक में राज्य में चल रहे हर घर नल योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, केंद्रीय मद से बन रही सड़क, स्वास्थ्य एवं रेल हवाई मार्ग के लिए जमीन अधिग्रहण से जुड़े मुद्दों पर चर्चा होने की संभावना है।

इधर, नीति आयोग के टीम के झारखंड दौरे को लेकर राज्य सरकार के विभिन्न विभागों ने तैयारियां शुरू कर दी है। केंद्रीय योजनाओं की अद्यतन स्थिति से संबंधित रिपोर्ट सभी विभागों से मुख्य सचिव कार्यालय में मंगाया जा रहा है, जिससे समेकित रिपोर्ट राज्य की ओर से नीति आयोग को दी जाए।

उल्लेखनीय है कि 27 मई को केंद्रीय नीति आयोग की बैठक में राज्य के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने सरकार के सामने कई प्रस्ताव रखे थे। उन्होंने एमएसएमई निदेशालय की स्थापना और जिला उद्योग केंद्रों को विकसित करने की मांग को भी रखा था। साथ ही एमएसएमई में अस्थाई पूंजी की सब्सिडी को 25 प्रतिशत से बढ़ाकर अधिकतम 40 फीसदी करने के मुद्दे पर भी कई सुझाव दिए थे।मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने नीति आयोग की बैठक में कहा था कि झारखंड ने विगत तीन वर्षों में विकास की गति को काफी तेजी से पकड़ा है। झारखंड में आधारभूत संरचना के क्षेत्र में निवेश की असीम संभावनाएं हैं। इसको लेकर के मिलकर काम करने की जरूरत है, ताकि केंद्र और राज्य के मिलकर काम करने से झारखंड तेजी से विकास कर सके।

किसानों और मजदूरों समेत सभी वर्ग के जीवन में सकारात्मक बदलाव के लिए कर रहे काम : हेमन्त सोरेन

रांची,राज्य सरकार का ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने पर विशेष जोर है। इस लिहाज से मनरेगा से जुड़ी योजनाएं झारखंड के लिए काफी मायने रखती है । इन योजनाओं में पारदर्शिता बनाए रखने के लिए इसकी मजबूत निगरानी होनी चाहिए। मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने आज झारखंड राज्य ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना परिषद की बैठक की अध्यक्षता करते हुए ये बातें कही। उन्होंने उपाध्यक्ष की अध्यक्षता में झारखंड राज्य ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना परिषद की बैठक हर तीन माह में आयोजित करने का निर्देश अधिकारियों को दिया, ताकि तमाम योजनाओं की नियमित और विस्तार से समीक्षा हो सके।

लाभुकों की भी अकाउंटेबिलिटी तय होनी चाहिए

मुख्यमंत्री ने कहा कि मनरेगा से जुड़ी योजनाओं के क्रियान्वयन में पारदर्शिता और गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए लाभुकों की भी अकाउंटेबिलिटी तय होनी चाहिए । इससे योजनाओं को तय समय सीमा में पूरा करने में भी मदद मिलेगी और लाभुकों को बिचौलियों से निजात मिलेगी।

काम की कोई कमी नहीं है , चल रही है कई योजनाएं

मुख्यमंत्री ने कहा कि मनरेगा के तहत राज्य सरकार द्वारा भी कई योजनाएं चलाई जा रही है। ऐसे में श्रमिकों के कार्य की कोई कमी नहीं है । उन्होंने अधिकारियों से कहा कि आप इन योजनाओं की ग्रामीणों को जानकारी दें और उन्हें इन योजनाओं से जोड़ने की दिशा में पहल करें । इससे उनकी आमदनी में बढ़ोतरी होगी और गांव का भी तेजी विकास होगा।

मनरेगा श्रमिकों के सामाजिक सुरक्षा के प्रावधानों का प्रचार प्रसार करें

मुख्यमंत्री ने कहा कि मनरेगा के तहत मजदूरी करने वालों के लिए भी सामाजिक सुरक्षा के तहत सहायता अनुदान का प्रावधान है । ऐसे में इसकी जानकारी ग्रामीणों को हो, इसलिए सामाजिक सुरक्षा से जुड़ी योजनाओं का बड़े स्तर पर प्रचार प्रसार सुनिश्चित करें।

चुआं और छोटे-छोटे झरने का जियो मैपिंग कराएं

मुख्यमंत्री ने अधिकारियों से कहा कि राज्य विशेषकर पहाड़ी इलाकों में अनेकों चुआं और छोटे-छोटे झरने हैं। इन सभी का जियो मैपिंग कराने की परियोजना बनाएं ताकि इसकी पानी की क्षमता को बढ़ाकर समुचित इस्तेमाल किया जा सके उन्होंने संवर्धन योजना के तहत बनने वाले कुओं का भी जियो मैपिंग कराने को कहा।

उपायुक्त को मिलेगी मनरेगा के साथ जिला कार्यक्रम समन्वय की जिम्मेदारी

मुख्यमंत्री ने डीआरडीए का पंचायती राज विभाग में विलय के आलोक में मनरेगा के अंतर्गत जिला कार्यक्रम समन्वयक की जिम्मेदारी जिलों के उपायुक्तों को देने के प्रस्ताव पर अपनी सहमति दे दी।

सामाजिक अंकेक्षण को क्रियाशील करने का निर्देश

मुख्यमंत्री ने कहा कि मनरेगा के तहत पंचायतों में चल रही योजनाओं का सोशल ऑडिट रेगुलर होना चाहिए। इससे योजनाओं में गड़बड़ी और लापरवाही पर अंकुश लगेगा। वहीं, दोषियों पर भी कार्यवाही हो सकेगी।

सिर्फ वर्दी पहनकर ही देश सेवा नहीं की जाती: मनोज कुमार

रांची। सीआरपीएफ के सेकंड इन कमांड मनोज कुमार ने कहा कि सिर्फ वर्दी पहनकर ही देश की सेवा नहीं की जाती है, बल्कि अनुशासित, ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ होकर भी देश की सेवा की जा सकती है। वे गुरुवार को कैंब्रियन पब्लिक स्कूल, कांके रोड में स्टूडेंट काउंसिल में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि सशक्त और अनुशासित युवा ही देश को नई दिशा दे सकते हैं।प्राचार्य डॉ. नीता पांडेय ने कुमार को पुष्पगुच्छ और स्मृति चिन्ह देकर मनोज कुमार को सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि स्टूडेंट काउंसिल विद्यालय के सुचारू संचालन का एक अभिन्न हिस्सा होता है। इसके माध्यम से बच्चों में नेतृत्व क्षमता और कर्तव्यनिष्ठा विकसित होती है।

इससे पहले सत्र 2023-24 के लिए चयनित स्टूडेंट काउंसिल के सदस्यों को शपथ दिलाई गई एवं कार्यभार सौंपा गया।

शौर्य प्रखर और वर्षा सोनी को सीनियर विंग, अरहम हिलाल और आराध्या कश्यप को जूनियर सेक्शन का हेड ब्वॉय एवं हेड गर्ल चुना गया। अंकिता गिरि और विभु वैभव को कल्चरल, भूमिका दत्ता और चिराग आशीष को कोयर ग्रुप तथा अनुष्ठा सिंह और आकाश सोनी को स्पोर्ट्स कैप्टन चुना गया। इनके अलावा गंगा, यमुना सतलज और गोदावरी हाउस के सीनियर तथा जूनियर विंग के कप्तानों को कार्यभार सौंपा गया।

कार्यक्रमों का संयोजन चीफ कॉर्डिनेटर आशा राज और संचालन कॉर्डिनेटर विनीता वर्मा ने किया। मौके पर सभी हाउस के इंचार्ज, खेल प्रशिक्षक और काफी संख्या में शिक्षक उपस्थित थे।

आर्थिक रुप से कमजोर बच्चों को नामांकन में मिलेगी प्राथमिकता : उपायुक्त

रांची

विद्यालयों में नामांकन के लिए जिला स्तरीय समिति की हुई बैठक

रांची के उपायुक्त राहुल कुमार सिन्हा ने गुरुवार को कस्तूरबा गांधी बालिका और झारखंड बालिका आवासीय विद्यालयों में नामांकन के लिए जिला स्तरीय समिति की बैठक की।

बैठक में समिति की ओर से शैक्षणिक सत्र 2023-24 में कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय और झारखंड बालिका आवासीय विद्यालयों में नामांकन के लिये विचार-विमर्श किया गया। समिति की ओर से इस सत्र में नामांकन के लिए प्रस्तावित सूची का अवलोकन करने का निर्णय लिया गया, ताकि अनुपस्थित प्रतिनिधि भी सूची से अवगत हो सके।

बैठक में उपस्थित सांसद और विधायक प्रतिनिधि को अपने स्तर के प्रतिनिधि के साथ विचार-विमर्श करते हुए आवश्यक सुधार के साथ नये सिरे से अगली बैठक में सूची रखने का निर्णय लिया गया।

समिति की ओर से संबंधित प्रखंड के कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय से दूर रहनेवाली बालिकाओं, जिनके माता-पिता में से एक की कोविड-19 से मृत्यु हुई हो। आर्थिक रुप से कमजोर बच्चों को नामांकन में प्राथमिकता देने की बात कही गयी। समाहरणालय में आयोजित बैठक में सांसद, विधायक के प्रतिनिधि सहित अन्य संबंधित पदाधिकारी उपस्थित थे।

भाजपा की सांगठनिक बैठक में शामिल हुए झारखंड प्रदेश अध्यक्ष सहित कई नेता

रांची/असम। भाजपा पूर्वी क्षेत्र के राज्यों बिहार, झारखंड, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, असम, अरुणाचल, मणिपुर, नागालैंड, मिजोरम, मेघालय, त्रिपुरा की गुवाहाटी में गुरुवार को सांगठनिक बैठक हुई। बैठक में झारखंड प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रघुवर दास, प्रदेश प्रभारी लक्ष्मीकांत वाजपेई, क्षेत्रीय संगठन महामंत्री नागेंद्र त्रिपाठी, राष्ट्रीय मंत्री आशा लकड़ा, प्रदेश संगठन महामंत्री कर्मवीर सिंह शामिल हुए।

बैठक को राष्ट्रीय संगठन महामंत्री बीएल संतोष, सह संगठन महामंत्री प्रकाश का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

बैठक में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश में तीसरी बार मजबूत सरकार बनाने की रणनीति पर गहन मंथन हुआ। पार्टी को सर्वस्पर्शी, सर्वव्यापी सर्व समावेशी बनाने, केंद्र सरकार सहित विभिन्न भाजपा शासित राज्यों की लोक कल्याण कारी योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प व्यक्त किया गया।

बैठक में मोदी सरकार के नौ साल बेमिसाल और महा जनसंपर्क अभियान में जनता से मिल रहे अपार जन समर्थन के लिए जनता के प्रति आभार प्रकट किया गया। झारखंड सहित गैर भाजपा शासित राज्यों में जनविरोधी नीतियों, कुशासन, ध्वस्त विधि-व्यवस्था, भ्रष्टाचार, आदिवासी, दलित, पिछड़ा, महिला, युवा विरोधी कार्यों को उजागर करते हुए उसके खिलाफ आंदोलन को तेज करने का भी आह्वान हुआ।

मंत्री जोबा मांझी ने आंगनबाड़ी केन्द्रों का भ्रमण किया, रक्षा सूत्र बांधा

कोडरमा। प्रदेश की महिला, बाल विकास और सामाजिक सुरक्षा मंत्री जोबा मांझी गुरुवार को कोडरमा पहुंचीं। उन्होंने कोडरमा प्रखण्ड अंतर्गत बलरोटांड, सलईडीह, नावाडीह, झरीटांड इंदरवा, हुसैनाबाद एवं सिंग्लोडीह आंगनबाडी केन्द्रों का भ्रमण किया गया। आंगनबाडी केन्द्र बलरोटांड में सेविका द्वारा टीएलएम के माध्यम से केन्द्र में होने वाले गतिविधियों की जानकारी दी गई और बच्चों के द्वारा बनाये गये वस्तुओं को दिखाया गया।

उन्होंने पोषण वाटिका का भी भ्रमण किया। पोषण वाटिका में हरे-भरे साग-सब्जियां देकर प्रसन्न हुईं। इसके बाद उन्होंने आंगनबाड़ी केन्द्र सलईडीह का भ्रमण किया, जहां छोटे-छोटे बच्चों के द्वार नृत्य कर इनका स्वागत किया गया। मंत्री ने आंगनबाड़ी केन्द्र के बच्चों के माता-पिता के साथ संवाद किया और बच्चों को दी जाने वाली सुविधाओं को जाना। मंत्री ने आंगनबाड़ी केन्द्र नावाडीह का भ्रमण किया, जहां सेविका द्वारा बताया गया कि इस आंगनबाड़ी केन्द्र के माध्यम से सवित्री बाई फुले किशोरी स्मृद्धि योजना से बच्चियों को लाभ दिया गया है।

हुसैनाबाद आंगनबाड़ी केन्द्र में बच्चों द्वारा हाथ धोने के छह तरीकों के बारे में जानकारी दी गयी। बच्चों ने गुड टच और बेड टच की जानकारी दी। मौके पर विधायक डॉ नीरा यादव, उपायुक्त आदित्य रंजन, उप विकास आयुक्त ऋतुराज, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी आरती कुमारी व अन्य मौजूद थे। मंत्री जोबा मांझी गुरुवार को डोमचांच प्रखंड के स्वावलंबी गांव लक्ष्मीपुर पहुंची। वे बन रक्षा बंधन कार्यक्रम में शामिल हुई। जहां पर पेड़ में रक्षा सूत्र में बांधकर जंगल बचाने के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। इसके बाद उन्होंने भूमि संरक्षण विभाग के बन रहे अमृत सरोवर का निरीक्षण किया। इसके बाद उन्होंने लक्ष्मीपुर गांव में स्थित गांव के चौपाल पर ग्रामीणों के साथ बैठक करके ग्राम सभा की।

मंत्री ने कहा कि आपलोगों के द्वारा सराहनीय कार्य किये जा रहे हहैं। आज आप पौधे लगा रहे है, ये आगे चलकर आपके लिए आजीविका का स्त्रोत बनेंगे। मंत्री ने स्वावलंबी गांव लक्ष्मीपुर और करमागढ़ के आंगनबाड़ी केन्द्र का स्वीकृति पत्र प्रदान किया। साथ ही कई लाभुकों को बीच बत्तख पालन के लिए चूजों का वितरण किया गया।

पर्यावरण और उर्जा संरक्षण के तहत रांची के सेंट्रल एकेडमी स्कूल में सेमिनार

रांची। सेंट्रल एकेडमी स्कूल बरियातू में गुरुवार को मिशन लाइफ के तहत पर्यावरण और उर्जा संरक्षण के तहत सेमिनार का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम सामाजिक संस्था विवेकानंद यूथ क्वेक फाउंडेशन, रिलेशंस और सामाजिक संस्था टीम ग्रीन के संयुक्त तत्वावधान में हुआ। इस अवसर पर सभी विद्यार्थियों ने 21 पौधों को स्कूल परिसर में लगाकर उनकी देखभाल करने का भी संकल्प लिया।

विवेकानंद यूथ क्वेक फाउंडेशन के संयोजक आशुतोष द्विवेदी ने कहा कि वन महोत्सव के तहत पर्यावरण और ऊर्जा संरक्षण करना हम सब की नैतिक जिम्मेदारी है। हम सभी को पर्यावरण और प्रकृति की रक्षा के लिए पर्यावरण और ऊर्जा संरक्षण के लिए जिम्मेवार होना पड़ेगा। तभी हम एक जिम्मेदार नागरिक बनकर देश के विकास में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सकते हैं। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में सेंट्रल एकेडमी स्कूल बरियातू के सचिव राहुल, प्राचार्य सुतपा भट्टाचार्य, गौरव अग्रवाल, टीम ग्रीन के निपुण जैन, प्रीति कुमारी, शुभम चौधरी, जी एन सहाय, निर्मला सहाय, हरेंद्र कुमार, स्कूल की शिक्षिका श्वेता, अंकिता चौरसिया, रश्मि कुमारी, अजय कुमार यादव, अजीत कुमार आदि कई उपस्थित थे।

डायन प्रथा उन्मूलन के लिए रांची में जागरुकता रथ रवाना

रांची। जिले में डायन कुप्रथा उन्मूलन के लिए समाहरणालय परिसर से गुरुवार को जागरुकता रथ रवाना किया। उपायुक्त राहुल कुमार सिन्हा ने हरी झंडी दिखाकर जागरुकता रथ रवाना किया।

उपायुक्त ने कहा कि जिले में डायन अधिनियम 2001 के तहत डायन कुप्रथा को जड़ से समाप्त करने के दृष्टिकोण से जागरुकता रथ को रवाना किया गया है। उन्होंने कहा कि जिले के सुदूरवर्ती क्षेत्रों में रथ के माध्यम से लोगों को डायन अधिनियम 2001 की जानकारी देकर डायन कुप्रथा के प्रति लोगों को जागरूक किया जायेगा। साथ ही उन्होंने लोगों से अपील की कि इस कुप्रथा को समाप्त करने में जिला प्रशासन का साथ दें। डायन कुप्रथा से जुड़े किसी मामले की जानकारी अपने निकटतम थाने में दें।

इस अवसर पर बताया गया कि महिला बाल विकास एवं सामाजिक सुरक्षा विभाग, झारखंड सरकार के निर्देश पर जिला प्रशासन (जिला समाज कल्याण कार्यालय, रांची) की ओर से रवाना जागरुकता रथ के माध्यम से डायन कुप्रथा उन्मूलन के लिए लोगों को जागरूक किया जाएगा। जिला के सभी प्रखंडों, प्रमुख चौक-चौराहों और हाट-बाजारों में जागरुकता रथ की ओर से ऑडियो के माध्यम से लोगों को जागरूक किया जाएगा।

संजय सिंह हत्याकांड में पुलिस की छापेमारी

रांची। सुखदेवनगर थाना पुलिस जमीन कारोबारी कमल भूषण के अकाउंटेंट संजय कुमार सिंह की हत्या के मामले में लगातार छापेमारी कर रही है। हत्याकांड में शामिल बदमाशों का सीसीटीवी फुटेज पुलिस के हाथ लगा है लेकिन तस्वीर साफ नहीं है। इस मामले में पुलिस छह से ज्यादा संदिग्धों को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है।

संजय कुमार सिंह हत्याकांड मामले में एसएसपी किशोर कौशल ने सिटी एसपी शुभांशु जैन के नेतृत्व में एक एसआईटी का गठन किया है। इसमें कोतवाली डीएसपी और सुखदेव नगर थाना प्रभारी सहित अन्य पुलिसकर्मी शामिल हैं। पुलिस को शक है कि संजय की हत्या में जमीन कारोबारी कमल भूषण के हत्यारे शामिल हैं। जमीन कारोबारी कमल भूषण की 30 मई, 2022 को गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। इस मामले में रांची पुलिस ने चार अपराधी राहुल कुजूर, डब्लू कुजूर, ख्वाइश अदनान और मुनव्वर अफिक को गिरफ्तार किया था। दो मुख्य आरोपित छोटू कुजूर और विशाल मामले में अबतक तक फरार हैं। पुलिस को आशंका है कि फरार दोनों आरोपितों ने खुद या दूसरे से संजय कुमार सिंह की हत्या करवाई है।

उल्लेखनीय है कि बुधवार की शाम को सुखदेव नगर थाना क्षेत्र के गैलेक्सिया मॉल के सामने स्थित काली मंदिर रोड में अपराधियों ने संजय कुमार सिंह की गोली मारकर हत्या कर दी थी। संजय राजधानी के जमीन कारोबारी कमल भूषण (अब मृत) के अकाउंटेंट थे। स्प्लेंडर बाइक पर सवार दो अपराधियों ने घटना को अंजाम देकर फरार हो गए थे।

साकची गोलचक्कर पर झामुमो ने एम पी के मुख्यमंत्री का पुतला फूंका

जमशेदपुर।

झारखंड मुक्ति मोर्चा केन्द्रीय समिति के निर्देशानुसर पूर्वी सिंहभूम जिला समिति की ओर से साकची गोलचक्कर पर मध्यप्रदेश राज्य के भाजपा शासन में सत्ता के नशे में चूर अहंकारी भाजपा नेता सह विधायक प्रतिनिधि परवेश शुक्ला के द्वारा आदिवासी युवक पर पेशाब करने की घटना ने पूरे देश को शर्मसार किया है। यह घटना भाजपा शासन में आदिवासियों को प्रताड़ित एवं अपमानित करने की चरम सीमा है। भाजपा के आदिवासियों के प्रति निकृष्ट मानसिकता को उजागर करते हुए उनके झूठे आदिवासी प्रेम का पर्दाफाश करना अत्यंत आवश्यक है। इस शर्मनाक घटना के विरोध में झामुमो ने भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा, केन्द्रीय आदिवासी कल्याण मंत्री अर्जुन मुंडा और मध्याप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का पुतला दहन करते हुए भाजपा सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से शामिल शेख बदरुद्दीन, प्रमोद लाल, पूर्व सांसद सुमन महतो, वीर सिंह सुरेन,महावीर मुर्मू, बाबर खान, अरुण प्रसाद, राज लकड़ा, नंटु सरकार,प्रीतम हेंब्रम , गुरमीत सिंह गिल, प्राथो प्रकाश माझी,अजय रजक,फते चंद टुडू, उमाकांत झा, गोपाल महतो, राजा सिंह, बाली मार्डि, सविता सिंह,दुर्गा बोई पाई, उमर खान, डी राकेश राव, समिम मालिक, हैप्पी तंतु बाई,मोहम्मद सलीम,कन्हैया रजक, साथ ही कई झामुमो कार्यक्रता उपस्थित थे।

हिन्दी दैनिक
झारखण्ड देखो
खबरें, कहानी, लोग और बहुत कुछ

दाल की खेती क्यों घटी?

दाल की खेती के इलाके अगर सिकुड़ रहे हैं, तो यह सवाल बहुत गंभीर हो जाता है। यह और भी चिंताजनक कि जिन किसानों को पहले बाजार से दाल नहीं खरीदनी पड़ती थी, वे भी अब ऐसा करने पर मजबूर हैं।

यह खबर चिंताजनक है कि बीते साल के मुकाबले भारत में धान और अरहर की खेती वाले इलाके इस साल घट गए हैं। कृषि मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक धान की खेती वाले इलाके 34 फीसदी और अरहर की खेती वाले इलाके 65 फीसदी कम हो गए हैं। खरीफ के सीजन में सोयाबीन की खेती वाले इलाके भी बीते साल के मुकाबले 34 फीसदी घट गए। यहां यह बात ध्यान में रखने की है कि दालों का सबसे बड़ा उत्पादक, उपभोक्ता और आयातक तीनों है। यानी भारत इस मामले में आत्मनिर्भर नहीं है। ऐसी हालत में दाल की खेती के इलाके अगर सिकुड़ रहे हैं, तो यह सवाल बहुत गंभीर हो जाता है। यह और भी चिंताजनक कि जिन किसानों को पहले बाजार से दाल नहीं खरीदनी पड़ती थी, वे भी अब ऐसा करने पर मजबूर हैं। यह हालत क्यों पैदा हुई?

वजह यह है कि किसानों को अब दाल की खेती करना फायदेमंद नहीं लगता। महाराष्ट्र जैसे दाल उत्पादक राज्य में अब रबी और खरीफ के सीजन के बीच के समय में उगाई जाने वाली मूंग और उड़द की जगह सोयाबीन ने ले ली है। जबकि अरहर की खेती वाले इलाकों क्षेत्र में दशकों से विस्तार नहीं हुआ है। जाहिर है, सोयाबीन का बेहतर भाव और तत्काल नकदी मिलने से किसानों में इसकी खेती के प्रति आकर्षण बढ़ा है। किसानों ने मीडियाकर्मियों को बताया है कि सोयाबीन की फसल सिर्फ 110 दिन में तैयार हो जाती है। उपज भी प्रति एकड़ 7–8 क्विंटल तक होती है। लेकिन अरहर की फसल 152 से 183 दिनों में तैयार होती है और उपज औसतन तीन क्विंटल प्रति एकड़ तक ही रहती है। लेकिन दालों का संबंध खाद्य सुरक्षा और लोगों को प्रोटीन उपलब्ध कराने से है। इसलिए सरकार को इस समस्या की तरफ ध्यान देना चाहिए। फिलहाल, सूचना यह है कि न्यूनतम समर्थन मूल्य के दायरे में चना, अरहर, उड़द, मूंग और मसूर जैसे पांच दलहन शामिल हैं, लेकिन, अक्सर किसानों को यह मूल्य नहीं मिलता। इस ट्रेंड को तुरंत पलटे जाने की जरूरत है, ताकि देश की खाद्य सुरक्षा खतरे में ना पड़े।

महाराष्ट्र के बाद बिहार पर नजर

विपक्षी एकता की पहली बैठक बिहार में हुई थी और उसके बाद भाजपा ने विपक्ष को कमजोर करने और एकता की संभावना को पंक्चर करने का अभियान तेज कर दिया। महाराष्ट्र में शरद पवार की पार्टी एनसीपी टूट गई है और उनके भतीजे अजित पवार भाजपा-शिव सेना की सरकार में उप मुख्यमंत्री बन गए हैं। अब राज्य में भाजपा-शिव सेना-एनसीपी की सरकार बन गई है। शरद पवार जैसे बड़े नेता की पार्टी का टूटना बड़ा राजनीतिक घटनाक्रम है, जिससे निश्चित रूप से विपक्षी पार्टियों के मनोबल पर असर हुआ होगा। अब कहा जा रहा है कि महाराष्ट्र के बाद बिहार की बारी है।

बिहार की बारी दो कारणों से बताई जा रही है। पहला कारण तो यह है कि एक साल पहले 30 जून को जब शिव सेना को तोड़ कर भाजपा ने एकनाथ शिंदे के साथ मिल कर सरकार बनाई थी उसके दो एक महीने बाद ही बिहार में नीतीश कुमार ने भाजपा से तालमेल तोड़ कर राजद के साथ सरकार बना ली थी। यानी भाजपा के महाराष्ट्र के जश्न को नीतीश ने बिहार में गम मे बदल दिया था। सो, अब उसका बदला लेना है। दूसरा कारण यह है कि शरद पवार की पार्टी की ही तरह नीतीश की पार्टी में कई कमजोर कडियां हैं, जिनका फायदा भाजपा उठा सकती है।

महाराष्ट्र में अजित पवार एनसीपी की कमजोर कड़ी थी। वे काफी समय से भाजपा के संपर्क में थे। उसी तरह एक समय नीतीश की पार्टी में नंबर दो की पोजिशन में रहे पूर्व केंद्रीय मंत्री आरसीपी सिंह अब भाजपा के साथ चले गए हैं। उनके जरिए बताया जा रहा है कि जदयू के कई नेताओं से भाजपा का संपर्क है। इसके अलावा जदयू के कई नेताओं को अगले चुनाव में अपने भविष्य की चिंता है। उनको लग रहा है कि राजद के साथ जाने की वजह से वे अपने चुनाव क्षेत्र में कमजोर हुए हैं। उनका समीकरण बिगड़ा है। ऐसे नेता भाजपा के साथ जा सकते हैं।

जदयू के कई नेताओं की महत्वाकांक्षा बड़ी है। उनको लग रहा है कि अगले लोकसभा चुनाव में भाजपा उनको टिकट दे सकती है। ध्यान रहे भाजपा पिछली बार 17 सीटों पर लड़ी थी और सभी सीटों पर जीती थी। इस बार वह 30 सीटों पर लड़ेगी। इसलिए उसे 13 नए उम्मीदवार चाहिए। जदयू के कुछ नेता इस उम्मीद में भी भाजपा से बात कर रहे हैं कि उनको लोकसभा की टिकट मिल जाए।

मैक्रों से फ्रांस में ऊबाल!

● श्रुति व्यास

फ्रांस में लोग बुरी तरह भड×के हुए हैं और राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों को बहुत ही मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। वहां पांच दिनों से दंगे चल रहे हैं और देश में तनाव इतना ज्यादा बढ़ा है कि राष्ट्रपति को अपनी पहले से तय तीन दिन की जर्मनी की वह यात्रा टालनी पड़ी है, जो पिछले 23 वर्षों में किसी फ्रांसीसी राष्ट्रपति की जर्मनी की पहली यात्रा होती। साफ़ है फ्रांस में हालात कितने खराब हैं।

कुछ दिन पहले तक राष्ट्रपति मैक्रों पेंशन पाने की न्यूनतम आयु 62 साल से बढ़ाकर 64 साल करने के अपने फैसले से पैदा हुए राजनैतिक संकट से जूझ रहे थे। इस निर्णय ने उन्हें काफी अलोकप्रिय बना दिया था। यह एक विडंबना ही है कि राष्ट्रपति मैक्रों दुनिया के नेताओं को एक मंच पर लाने में आगे रहे हैं। वे स्वच्छ पर्यावरण वाली पृथ्वी, शांति और आर्थिक स्थिरता की प्राथमिकता लिए हुए हैं।लेकिन अपने देश में ही उन्हे अशांति और अस्थिरता का मुकाबला करना पड रहा हैं। यूक्रेन युद्ध प्रारंभ होने से पहले रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से मुलाकात करने वालों में वे सबसे पहले बड़े नेता थे झ हालांकि उनके इस कदम की उस समय तीखी प्रतिक्रिया हुई थी। मैक्रों को उम्मीद है कि वे ₹वह अंतर्राष्ट्रीय मेल-मिलाप कायम कर पाएंगे जो युद्ध रोकने और मौजूदा चुनौतियों का मुकाबला करने में उपयोगी होगा'₹ और ₹एक शक्तिशाली यूरोप का निर्माण कर पाएंगे जो बदली हुई दुनिया में एक मज़बूत आवाज़ बन सकेगा और जिसके सिद्धांत दुनिया के लिए उपयोगी होंगे।₹ तभी अपने करिश्माई व्यक्तित्व के कारण वे अपने समकालीन नेताओं के बीच एक हीरो बनकर उभरे हैं।

लेकिन अपने देश में उन्हें हिकारत और नफरत का सामना करना पड़ रहा है। वे जनता में बहुत अलोकप्रिय हो गए हैं। यहां तक कि देश के इतिहास में पहली बार फ्रांसीसियों के एक बड़े क्षेत्र में प्रवेश पर पाबंदी लगा दी गई है जहां 8 मई को मुक्ति दिवस के रूप में मनाया जाता था।

वे फ्रांस के सबसे युवा राष्ट्रपति हैं, जिन्होंने दुनिया में चल रही दक्षिणपंथ और पोपुलिज्म की लहर को शिकस्त दी थी। लोगों को उनसे बहुत उम्मीदें थी। उन्होंने राजनैतिक ढांचे की बांटने वाली दीवारों को ध्वस्त किया था। लेकिन आज वे निंदा और तिरस्कार का सामना कर रहे हैं। सार्वजनिक आयोजनों में उनका मजाक उड़ाया जाता है। उनके साथ धक्का-मुक्की हुई है।उन्हें थप्पड़ मारे गए हैं और उन पर अंडे-टमाटर फेंके जाते हैं। राजनैतिक दृष्टि से भी वे असुरक्षित हैं। उनकी अल्पमत मध्यमार्गी सरकार धुर वामपंथी और राष्ट्रवादी व धुर दक्षिणपंथी समूहों के दो पाटों के बीच फंसी हुई है। पहले पेंशन के मुद्दे और अब इन दंगों के चलते विपक्ष को उन पर कीचड़ उछालने का एक और मौका मिल गया है।

हालांकि इस बार दंगों की प्रकृति अलग है। वे किसी सरकारी नीति के कारण नहीं भड×के हैं बल्कि इनके मूल में है पुलिस द्वारा की गई हिंसा और नस्लवाद। पिछले हफ्ते मोरक्को और अल्जीरियाई मूल के एक 17 साल के युवक को एक ट्रैफिक स्टाप पर एक पुलिस अधिकारी ने गोली मारी,जिससे उसकी मौत हो गई। इस हत्या ने पुलिसिया हिंसा के सबसे अतिवादी स्वरूप को बेनकाब किया जिसमें उन समुदायों को लंबे समय से निशाना बनाया जाता रहा है जो श्वेत नहीं हैं। इस घटना से पूरे देश में असंतोष फैला। यह राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों की सत्ता के लिए एक और झटका है क्योंकि उन्हें एक बार फिर आग की लपटों में घिरे फ्रांस का सामना करना पड़ रहा है। राष्ट्रपति ने पुलिस की कार्यवाही को 'अक्षम्य' और 'गैर-जिम्मेदाराना' बताया। सन् 2017 की शुरूआत में पुलिस द्वारा हथियारों के उपयोग के बारे में नियमों में ढील दी गई थी (यह मैक्रों के पूर्ववर्ती फ्रेंकोइस हॉलैंड ने किया था)। इसके नतीजे में उसके बाद के सालों में पुलिस द्वारा प्राणघातक गोलीबारी की घटनाओं में लगातार वृद्धि हुई है। सन् 2017 में जहां इन घटनाओं में 27लोगों की मौतें हुईं थीं वहीं सन् 2021 में इनमें 52 लोग मारे गए।

सन् 2022 में सड×कों पर वाहनों की जांच के दौरान 13 लोग मारे गए, जो एक रिकार्ड है। बॉनल्यु (बड़े शहरों के उपनगरों) में हालात ज्यादा बु-रे हैं। वहां रहने वालों का मानना है कि पुलिस अहंकारी है और उनके साथ बुरा व्यवहार करती है। बताया जाता है कि युवकों के आईडी कार्ड देखे जाते हैं और उनके 'इरादों' की पड़ताल की जाती है।30 जून को संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार कार्यालय ने फ्रांस से गुहार की कि वह ₹कानून लागू करने में नस्लवाद और भेदभाव के गंभीर मामलों की ओर ध्यान दे।₹ राष्ट्रपति मैक्रों अत्यंत गंभीर मुश्किल में हैं। सन् 2017 में पद संभालने के बाद से उन्होंने पुलिस पर भरोसा किया जिससे देश की सियासत में पुलिस की भूमिका और महत्वपूर्ण हुई। विभिन्न सामाजिक सुधारों के विरोध के लंबे सिलसिले झ जिसमें पेंशन प्रणाली का मुद्दा सबसे ताजा है झ का मुकाबला पुलिस ने सख्ती से किया। महामारी के सबसे बुरे दौर में मैक्रों द्वारा लगाए गए लाकडाउन और कर्फ्यू पर अमल करवाने में पुलिस अधिकारी सबसे आगे थे। अब जबकि पुलिस राष्ट्रस्तरीय टकरावों और विवादों के केन्द्र में है, कोई आश्चर्य नहीं कि मैक्रों के हाथ बंधे हुए होंगे। इसके अलावा राजनीति में भी मुश्किले है। राजनीति में भी मैक्रों की स्थिति अब अच्छी नहीं है। उनकी विरोधी और प्रतिद्वंद्वी नेशनल रैली की मारीन ल्युपेन ने इसे ₹तानशाह सत्ता का नशा₹ बताया और स्थानीय स्तर पर कर्फ्यू लगाने और जरूरत होने पर आपातकाल लागू करने की बात कही। उन्होंने प्रवासियों से जुड़े कानूनों के 'ढीले-ढाले' होने की बात भी कही हालांकि 17 साल का मृतक नाहेल देश में ही पला-बढ़ा फ्रांस का नागरिक था।

गोलीबारी की यह घटना, ल्युपेन द्वारा बुने जा रहे राजनैतिक नैरेटिव, और हिंसा रोकने में राष्ट्रपति मैक्रों की अक्षमता और पुलिस के अत्यधिक उपयोग झ इन सबके मिलेजुले असर के चलते देश की जनता बहुत गुस्सेमें है। इसमें शक नहीं है कि हाल के समय में फ्रांस में हालात दूसरे धर्मों के लोगों और गैर-श्वेतों के विरूद्ध रहे हैं। समय-समय पर फ्रेंच पहचान और राष्ट्रवाद का धुर दक्षिणपंथी नैरेटिव लोगों के मन में बिठाने की कोशिशें होती रही हैं। हाल की गोलीबारी की घटना से समाज का वह तबका भड×क उठा है, जो इस तरह के नैरेटिव से सहमत नहीं है बल्कि चाहता है कि ऐसे विचारों के लिए समाज में कोई जगह न हो।तभी गुस्सा अब सड×कों पर है और फ्रांस वैसे ही सोच रहा है जैसी कि पूरी दुनिया सोच रही है। जहाँ तक राष्ट्रपति मैक्रों का सवाल है, इतिहास उन्हें एक ऐसे राष्ट्रपति के रूप में याद करेगा जिसने फ्रांस के समाज के लम्बे समय से चले आ रहे विभाजनों को ख़त्म करने की कोशिश हुई की लेकिन न केवल उसमें बुरी तरह असफल रहे बल्कि सर्वाधिक अलोकप्रिय भी हुए।

अब किसी तोड़फोड़ से राहुल नहीं रुकेंगे !

● शकील अख़्तर

तेलंगाना की राहुल की विशाल सभा ने दिखा दिया कि जनता किसके साथ है।ज्यही है फासिज्म कि हम उठा कर ले जाएंगे, तोडेंगे, बता रहे हैं! क्या कर लोगे? जी हां! न्यूज चैनलों और अखबारों में ऐसे ही हैडिंग भरे पड़े हैं। एनसीपी के बाद जेडीयू तोडेंगे। उत्तर प्रदेश में भी विपक्ष टूटेगा। कर्नाटक बचेगा नहीं, कांग्रेस मध्य प्रदेश को याद रखे!ज्मीडिया का हाल बैंड बाजा टीम से भी बुरा हो गया है। बैंड वाले शोक सभा मेंखुशी की घुन नहीं बजाएंगे। चाहे आप कितना ही पैसा दे दो। एक नैतिकता, प्रोफेशनलिज्म उनमें है। मगर इस मीडिया से आप कुछ भी कहलवा लो लिखवा लो। यह चेतावनी या धमकी नहीं है, यही है फासिज्म कि हम उठा कर ले जाएंगे,तोडेंगे, बता रहे हैं! क्या कर लोगे?

जी हां! न्यूज चैनलों और अखबारों में ऐसे ही हैडिंग भरे पड़े हैं। एनसीपीके बाद जेडीयू तोडेंगे। उत्तर प्रदेश में भी विपक्ष टूटेगा। कर्नाटक बचेगा नहीं, कांग्रेस मध्य प्रदेश को याद रखे!

मतलब रोक सकते हो तो रोक लो। आज तुम्हारे यहां चोरी होगी। चोरी औरसीनाजोरी का मुहावरा यहीं से निकला है। सामंतवाद में ऐसी ही दबंगी होतीथी। उसी के खिलाफ जनता को संरक्षण देने के लिए लोकतंत्र आया। लोकतंत्र मतलब लोग अपनी मर्जी से अपनी शासन व्यवस्था चुनें। दलीयलोकंतत्र। जहां आप किसी दल को उसके प्रतिनिधि को अपने लिए चुनते हैं। मगरअब तो उन्हें उठाकर ले जाया जा रहा है। और कहा जा रहा कि और ले जाएंगे। महाराष्ट्र में ले गए। बिहार में करेंगे। यूपी में भी होगा। और गोदीमीडिया इसको बहुत बहादुरी का काम बता रहा है।

माफ कीजिए यह बिल्कुल भांडों का काम है। जो किसी लड़की का अपहरण करने कोभी राजा की बहादुरी और वीरता बता देते थे।

सू- दोकू क्र.117

9		8		1		7		
4		6			7		5	
	3			6		8		9
		3			1		6	
5			6			9		
		9		5			3	
3			7		9			1
	5			2		3	9	
1		4			8		7	

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.116 का हल

7	5	6	4	1	2	8	3	9
3	4	8	6	7	9	2	1	5
1	2	9	5	3	8	7	4	6
2	8	1	9	5	6	4	7	3
6	9	7	2	4	3	5	8	1
5	3	4	7	8	1	9	6	2
8	7	2	1	6	5	3	9	4
4	6	5	3	9	7	1	2	8
9	1	3	8	2	4	6	5	7

शब्द सामर्थ्य -117

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. समाप्ति, खात्मा 3. रोगी, बीमार 5. गंभीरता, गहराई 6. बलपूर्वक, जबरदस्ती, व्यर्थ 9. लानत, तिरस्कार सूचक एक शब्द 10. लक्ष्मी, कमला 11. औषधालय 13. नाव खेने का लकड़ी का यंत्र 14. सतह, 'लेवल' 15. बिजली, तड़ित 17. चौकसी, सावधानी, बचाव 19. कहने वाला, वाचनकर्ता 20. सुंदर, अच्छा, बढ़िया 21. लगातार, तड़-तड़ करते हुए।

ऊपर से नीचे

1. शरीर का कोई भाग, शरीर 2. खोज-बीन, जांच-पड़ताल 3. वोट देने का हक 4. जो अत्यधिक शक्तिशाली व कठोर प्रकृति का हो, दृढ़, मजबूत 7. बरसात, पावस, बारिश 8. भरना, अटना, अंदर करना 12. घटना, हादसा, दुर्घटना 13. लिबाज़, पहनने का ढंग 16. नीला वस्त्र पहने वाला, नीला वस्त्र 17. ऐक्य, एक होने का भाव 18. दिल्ली स्थिति प्रसिद्ध जेल।

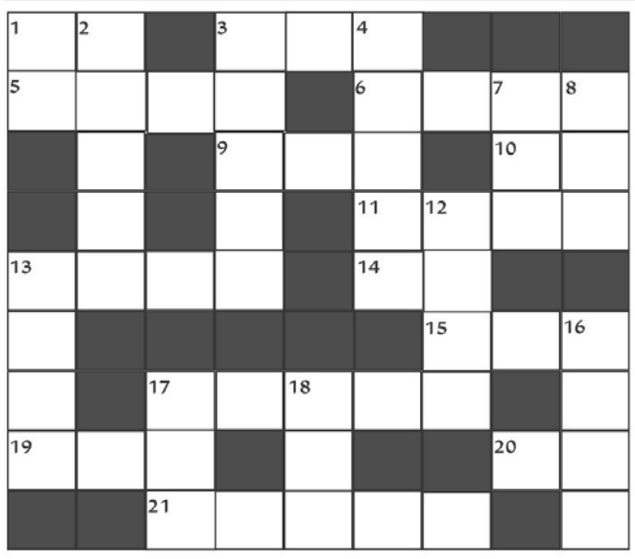

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 116 का हल

वा	स्ता			सि	स	की		
जि		ल	प	ट		मा	चि	स
ब	द	ला		क			ल	
		ट		नी	ल	क	म	ल
ता	ली		का		की			हू
क		स	रो	का	र			लु
झां		ज	बा	न		म	सी	हा
क	च	ना	र		भा	र्या		न
	र्म			ज	र	दा		

आज का राशिफल

मेष : (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

आज आपका दिन आपके लिए उत्तम है। सभी काम आपके मन मुताबिक पूरे होंगे। आपके सकारात्मक विचारों से खुश होकर वरिष्ठ आपको उपहार स्वरूप कोई उपयोगी वस्तु गिफ्ट कर सकते हैं। छात्रों को अपनी पढ़ाई में बदलाव करने के लिए समय झ सारिणी में बदवाल करने की जरूरत है। आप अपने करियर को लेकर थोड़ा परेशान होंगे। आपकी मुलाकात या बात किसी पुराने मित्र से हो सकती है, जो आगे चलकर आपके लिए फायदेमंद होगी। घरेलू वातावरण किसी मुख्य घटना से भावनात्मक हो सकता है। स्वास्थ्य लाभ होगा।

वृष : (ई, ऊ, ए, ओ, वा, वी , वु , वे, वो)

आज आपका दिन उत्तम रहेगा। सारी इच्छाओं की पूर्ति होगी। आपका कला के क्षेत्र की तरफ रुझान बढ़ेगा। आपको व्यापार से लाभ तो होगा, लेकिन आपके घर के खर्चों में वृद्धि भी होगी। बिजनेस के सिलसिले में आपको यात्रा करनी पड़ सकती है। दूसरों के मामलों में दखल ना दें, आवशचकता पडने पर ही अपनी राय दें। आपके बच्चे आपको शुभ समाचार दे सकते हैं। जिससे आपको खुशी होगी। घर की परेशानियों से राहत मिलेगी।

मिथुन : (का, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, हा)

आज आपका दिन अनुकूल रहेगा। अगर आप नौकरी कर रहें तो ट्रांसफर किसी ऐसे स्थान पर हो सकता है, जहां से आना जाना करने में आपको आसानी होगी। हो सके तो उधार के लेन-देन से बचें। आपको व्यापार में धनलाभ का अवसर प्राप्त हो सकता है। ऑफिस में आज कुछ सहकर्मी आपके काम को लेकर आपका सपोर्ट करेंगे। जिससे ऑफिस का माहौल बदल सकता है। इस राशि के छात्रों के लिए दिन अच्छा है।

कर्क : (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

आज आपका दिन परिवार के साथ बीतेगा। पारिवारिक कार्यो को करने में घर के सभी सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा। आपका समय बच्चों के साथ अधिक बीतेगा साथ ही उनको कुछ अच्छा सिखा भी सकते है। कोई मित्र आपसे मिलने आ सकता है। मित्र से निजी समस्यायों को शेयर करने से मन का बोझ हल्का होगा। प्रेमी के लिए दिन बढिया है। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी।

सिंह : (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

आज आपका दिन सामान्य रहेगा। यात्रा हो सकती है जो किसी भी काम से सम्बन्धित हो सकती है। यात्रा के दौरान किसी दोस्त/रिश्तेदार से आपकी मुलाकात हो सकती है। जिससे आपका मन प्रसन्न हो जाएगा। स्टूडेंट्स के लिए दिन अच्छा रहेगा। कम्पटीटिव एग्जाम से सम्बंधित कोई अच्छा समाचार आपको मिल सकता है। प्रेमी के लिए दिन बढिया है। अगर कोई नयी गाड़ी खरीदना चाह रहे हैं तो ले लीजिए। आर्थिक क्षेत्र में स्थिरता रहेगी।

कन्या : (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

आज आपका दिन बेहतर रहेगा। किसी कार्य को पूरा करने के लिए योजना बना सकते हो। अपने व्यापार को लेकर मन में नए-नए विचार आ सकते हैं। दाम्पत्य संबंध मधुरता से भरपूर रहेगा। आपकी उलझने कम हो सकती हैं। प्रेमी के लिए दिन अनुकूल है। इंजीनियर्स के लिए दिन अच्छा रहेगा, किसी कम्पनी से जॉब के ईमेल आ सकती है। आपकी सेहत अच्छी रहेगी।

तुला : (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते)

आज आपका दिन खुशनुमा रहेगा। व्यापार में लाभ होगा जिससे आपकी आर्थिक स्थिति बेहतर होगी। आप किसी दोस्त की मदद करने के लिए उसके घर जा सकते हैं। ऑफिस में काम को लेकर बॉस आपकी तारीफ कर सकते हैं। छात्रों के लिए दिन अच्छा रहेगा। राजनीतिक और सामजिक कार्यों से जुड़े लोगो की तारीफ हो सकती है। परिवार के साथ रात को डिनर का प्लान बन सकता है।

वृश्चिक : (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

आज आपकी नये कार्यों में रुचि बढ़ेगी जिससे आपको कुछ नया सीखने को मिलेगा। आप फिजूल के खर्च को कम करने का प्रयास करेंगे तो आपके भविष्य के लिए पैसे इक्ठे होने में आसानी होगी। आर्थिक पक्ष पहले से अधिक मजबूत रहेगा। सरकारी ऑफिस में काम करने वालों का आज प्रमोशन हो सकता है। आर्किटेक स्टूडेंट के लिए किसी मल्टीनेशनल कंपनी से ऑफर आ सकता है।

धनु : (ये, यो, भा, भी, भू, ध, फा, ढा, भे)

आज आपका दिन अच्छा रहेगा, ऑनलाइन क्लास से कुछ नया सीखने को मिलेगा। परिवार ने एकता का माहौल रहेगा किसी कार्य को लेकर सब एक मत हो सकते है। जीवनसाथी को कुछ अच्छा सा उपहार दे सकते हैं, रिश्ता और भी मधुर होगा। जो लोग ऑफिस का काम घर से कर रहे हैं उनको अपने काम पर विशेष ध्यान देना चाहिए। महिलाएँ घर का कार्य जल्दी समाप्त कर के परिवार वालो पर ध्यान देंगी।

मकर : (भो, जा, जी, खी, खू, खा, खो, गा, गी)

आज आपका दिन आपके लिए ठीक-ठाक रहेगा। ज्यादा क्रोध करने से आपका काम बिगड़ सकता है, बेहतर होगा कि किसी भी बात पर गुस्सा करने से बचें। पॉपर्टी में निवेश करने के लिए दिन शुभ है। कलात्मक कार्यों में आपकी रूचि बढ़ेगी। पढ़ाई में छात्रों के लिए यह समय जी-जान लगाकर पढने का है। नये प्रोजेक्ट पर काम करने से पहले मित्रों से सलाह लेना आपके लिए फायदेमंद रहेगा।

कुंभ : (गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा)

आज आपका दिन आपके लिए लाभप्रद रहने वाला है। आपको कोर्ट-कचहरी के मामलों में सफलता मिल सकती है। आपने जीवनसाथी पर भरोसा बनाये रखें। आप जितना हो सके दूसरों की राय लेकर ही किसी कार्य की शुरूआत करें सफलता मिलनी तय है। ऑफिस में आपको सावधानी बरतने की आवशचकता है। छात्रों के लिए दिन थोड़ा उतार-चढ़ाव भरा हो सकता है, पढ़ाई पर ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है।

मीन : (दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची)

आज आपका दिन सामान्य रहेगा। राजनीति से जुड़े लोगों का दिन अच्छा है, आपकी बातों से लोग प्रभावित होंगे। आपकी सोच में सकरात्मकता आयेगी। महिलाएं शॉपिंग करते समय खुद को थोड़ा काबू में रखें खर्च बढ़ सकता है। थिएटर से जुड़े लोगों के लिये दिन बढिया है, आपके काम की तारीफ होगी। इस राशि के विवाहितों के लिए दिन बढिया रहेगा।

RNI Title Code - JHAHIN01027 स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक डॉ. सिकंदर कुमार द्वारा माँ भवानी आर्ट भागलपुर रोड नीयर सिनेमा हॉल दुधानी दुमका से मुद्रित एवं झारखंड देखो कार्यालय मजिस्ट्रैट कॉलोनी बंदरजोरी, दुमका से प्रकाशित प्रधान संपादक डॉ. सिकंदर कुमार (मो. नं. 9955599136)
(इस अंक में प्रकाशित समाचारों का चयन एवं संपादन के लिए पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी)

हमें नहीं चाहिए बंदिशें

आज की महिला दो दशक पहले की महिलाओं की तुलना में ज्यादा आत्मनिर्भर हैं। उनके पास पहले की तुलना में कहीं ज्यादा अधिकार हैं। इन्हीं अधिकारों के बल पर महिलाएँ परंपरावादी भारतीय समाज में अपनी एक अलग जगह बना पा रही हैं। एक समय महिलाओं को सिर्फ घर संभालने योग्य ही समझा जाता था। इसके उलट आज की सुपर वुमन घर और बाहर दोनों ही मैदानों में बराबर योगदान देती है। वह एक परफेक्ट माँ है तो एक परफेक्ट कर्मचारी भी है। वह आदर्श पत्नी भी है तो बेहतर सहकर्मी भी। लेकिन इन सबके बीच आजादी के नाम पर महिलाएँ अपने कंधों पर जरूरत से ज्यादा बोझ ढो रही हैं। खुद को सामंजस्य व आधुनिकता की मिसाल साबित करने के फेर में वे तनाव व उलझनों के बीच फँसी हैं। सभी को संतुष्ट करने की चाहत में सुपर वुमैन खुद को भूलती जा रही है और स्वयं के लिए कुछ पल भी नहीं निकाल पा रही।

महिलाओं के इस बदले हुए रूप को अगर आजादी का नाम दिया जा रहा है तो इसके भी कुछ अपने ही तर्क हैं। इनमें सबसे पहले आती है महिलाओं की विकसित होती तर्क-क्षमता। दो दशक पहले की तुलना में आज की महिलाएँ शिक्षा के प्रति कहीं ज्यादा जागरूक हैं। महिलाओं में शिक्षा का स्तर बढ़ने से उनके सोचने-समझने की क्षमता का भी विकास हुआ है। इस विकास ने ही उन्हें दीन-दुनिया की जानकारी दी व खुद के लिए सोचने की समझ विकसित की है। समाज महिलाओं की इसी समझ को उनकी आजादी का नाम देता है। महिलाओं को आजादी की पाठशाला में प्रवेश दिलाने के लिए शिक्षा ही प्रथम अध्याय माना जा सकता है लेकिन इस अध्याय तक कितने प्रश महिलाएँ पहुँच पाती हैं, यह प्रश्न वाकई विचारणीय है।

असल में महिलाओं के विकास के नाम पर हमारी नजर सिर्फ उन शहरी महिलाओं पर रुकती है, जो आधुनिकता के बंधन में तरक्की की सीढ़ियाँ चढ़ रही हैं जबकि असल भारत तो उन छोटे व मझौले शहरों, कस्बों व ग्रामीण क्षेत्रों में बसता है जहाँ अभी ऐसी स्थिति नहीं है। इन इलाकों में देश की 60 फीसद महिलाएँ रहती हैं जिन्हें विकास की परिभाषा तक मालूम नहीं। शिक्षा के नाम पर इन महिलाओं में से शायद कुछ ही कॉलेज क्या, स्कूल तक पहुँची हों। दीन-दुनिया की जानकारी से दूर इन्हें सिर्फदो वक्त का भोजन बनाने और घर के सदस्यों की देखभाल करने के अलावा और कुछ भी नहीं मालूम। क्या देश की महिलाओं का यह तबका विकासशील भारत की आजाद महिलाओं को प्रदर्शित नहीं करता और अगर करता है तो इनकी दशा आज भी कई दशकों पहले जैसी ही क्यों है? देश में महिलाओं की एक बड़ी आबादी को एक सामान्य जीवनशैली जीने वाली शहरी महिला जैसी सहूलियत भी उपलब्ध नहीं है।

आजाद भारत की आजाद महिलाओं को क्या वाकई आजादी के सही मायने पता हैं? क्या वे इसके फायदे और नुकसान से भली-भाँति परिचित हैं? या महज घर से बाहर निकलकर कई भूमिकाएँ निभाना मात्र ही उनके लिए आजाद ख्याल का होना है! सामाजिक बंधनों, मान्यताओं और सोच के स्तर पर महिलाओं को आज तक आजादी नहीं मिल सकी है। भले ही वह घर हो या बाहर, हर जगह महिलाओं पर बंदिशें लगाने व उन्हें कमजोर साबित करने वालों की कमी नहीं है। बड़ी बात यह है कि महिलाओं को उनकी कमजोरी का एहसास कराकर उन्हें पीछे धकेलने में कई बार उनके अपनों का ही योगदान होता है। हालाँकि महिलाओं की आजादी के पैरोकार यह दावा करते कि अब समाज का एक बड़ा वर्ग महिलाओं को हर प्रकार की आजादी देता है, वे अपनी पसंद के क्षेत्र में करियर बना सकती हैं और अपनी मर्जी के अनुसार जीवनसाथी का चुनाव भी कर सकती हैं। अब इसे आजादी नहीं तो और क्या कहेंगे? पर सवाल यह है कि मात्र कुछ बातों के आधार पर महिलाओं की आजादी को तर्कसंगत माना जा सकता है? शायद नहीं।

आजादी के असल मायने तो तब समझ में आते हैं जब समाज हर क्षेत्र में महिलाओं को बराबरी का अधिकार दें तथा पूरे देश में हर तबके की महिलाओं को एक ही प्रकार की सुविधाएँ और अधिकार हासिल हों। इससे भी बड़ी बात यह है कि महिलाएँ और पुरुष तब बराबर माने जाएँगे, जब पुरुष भी खुशी-खुशी महिलाओं की दुनिया में हिस्सेदारी करना चाहे। जब तक यह मानसिकता नहीं पैदा होती सुपर वुमन की किताब महिलाओं को बरगलाने का जरिया भर है।

अगर वाकई औरत और आदमी समानता की सरजमीं पर खड़े होते और आज 20 प्रश महिलाएँ उद्योग और कारोबार की दुनिया में अपनी भूमिका अदा कर रही हैं तो कम से कम इससे आधे पुरुष तो उस दुनिया की जिम्मेदारी उठा रहे होते जिसे आधी दुनिया की निजी पूरी दुनिया मान लिया जाता है। आज भी बच्चे और रसोई औरतों की ही दुनिया बने हुए हैं चाहे जितनी बराबरी और स्त्री-पुरुष समानता की दुहाइयाँ दी जा रही हों। 90 प्रश सुपर वुमन घर पहुँचते ही रसोई में घुसती हैं, मगर 2 प्रश साधारण पुरुष भी ऐसा नहीं करते। क्या सुपर वुमन का तबका महिलाओं को और ज्यादा बोझ व जिम्मेदारियों से लादने का बहाना नहीं है?

ये टीवी वालियाँ कभी गेटअप नहीं बलदतीं !

टेलीविजन पर इन दिनों दिखाए जा रहे धारावाहिकों में महिला पात्रों के कपड़ों-मेकअप और जेवरों को देखकर कोफ्त होने लगती है। चाहे दृश्य रात का हो और वे सो रही हों फिर भी कीमती साड़ियाँ और महँगे जेवर पहने होंगी। कहानी चाहे समृद्ध परिवार की हो या मध्यमवर्गीय परिवार की- महिला पात्रों के रहन-सहन में कोई फर्क नहीं होगा।

फिर जिस पात्र का चरित्र जितना निगेटिव शेड लिए हुए होगा उसके कपड़े, जेवर और मेकअप उतना ही भड़कीला होगा। समझ में नहीं आता कि निर्देशक इस तरह के प्रस्तुतीकरण से संदेश क्या देना चाह रहे हैं?

एक-दो नहीं, बल्कि करीब-करीब सभी धारावाहिकों में नारी पात्र नित नई फैशन के जेवरों व कपड़ों की नुमाइश-सी करती प्रतीत होता है। रोजमर्रा की घटनाएँ हों चाहे कुछ विशेष परिस्थिति, यहाँ तक कि दुखी, सताई जाने वाली महिलाएँ भी भले ही मुँह लटकाए आँसू बहाएँ, भगवान से शिकायत करें, पर कपड़े उनके लकदक! अमीरी का यह भौंडा प्रदर्शन इन्हीं धारावाहिकों में आपको देखने को मिलेगा।

वृद्ध महिला पात्रों को देखकर तो वितृष्णा-सी उपजती है। उनका काम है तथाकथित 'परंपरा' का निर्वाह करना, दूसरों के कान भरना, कन्याओं को नसीहत देना कि चाहे जिस कीमत पर हो उन्हें अपनी शादी बनाए रखना है, पति जैसा भी हो उसे पकड़े रहना है। एक पुरातन प्रतिक्रियावादी चरित्र हो, पर शरीर पर आधुनिक जेवरों की कमी नहीं।

और फिर काइयाँ किस्म की फैशनपरस्त चरित्रों की तो बात ही क्या। ये धूर्त, झूठी, हेर-फेर करने वाली अमीरजादियाँ किसी मॉडल से अपने को कम नहीं समझतीं। न तो ऐसी धूर्तता आपको अपने आसपास नजर आएगी, न ऐसी महँगे लिबास में घर में काम करती महिलाएँ। एक छोटे-से गाँव में भी आलीशान बंगले के सर्वसुविधायुक्त रसोईघरों में नई-नकोर डिजाइन वाली खाने की टेबल पर पुरुषों के पीछे खड़ी रहकर खाना खिलाने वाली महिला पात्र तो दुल्हनों को भी मात देती है।

यह पहनावा सिर्फ इसलिए नहीं अखरता कि वे परिस्थिति के अनुरूप या स्वाभाविक नहीं होते, वरन एक गंभीर कारण भी है। आमतौर पर महिला दर्शक और विशेषत: मध्यमवर्गीय स्त्री समाज के मन में ये जेवरों के प्रति एक जबर्दस्त लगाव पैदा करते हैं जबकि ये पहनना उनके वश की बात नहीं है। वे अपने पतियों या पुत्रों को अनैतिक कार्य कर ज्यादा धनोपार्जन के लिए उकसाती हैं या दबाव डालती हैं। वे इन उपभोक्ता वस्तुओं के उत्पादकों द्वारा किए जा रहे षड्यंत्र से बेखबर रहती हैं, जो इन वस्तुओं की बिक्री से अथाह संपत्ति कमा लेते हैं। किंतु बदले में परिवारों में मनमुटाव व समाज के भ्रष्ट तरीकों में लिप्तता बढ़ जाती है।

ग्रेप्स शायनी

सामग्री : दूध 2 कप, क्रीम 1 कप, हरे अंगूर 250 ग्राम, कॉर्नफ्लोर 1 छोटा चम्मच, चीनी 1 बड़ा चम्मच, वनिला एसेंस।

विधि : कॉर्नफ्लोर को 1/4 कप दूध में घोलें। शेष दूध को उबलने रखें। जब दूध की मात्रा आधी रह जाए तो चीनी मिला दें साथ ही कार्नफ्लोर का घोल भी मिलाकर थोड़ी देर चलाएँ। जब दूध गाढ़ा हो जाए तो गैस बंद कर दें, ठंडा होने पर इसमें आधी क्रीम की मात्रा मिलाकर अच्छी तरह चलाएँ। शेष क्रीम को बर्फ पर रखकरफेंटें ताकि गाढ़ी हो जाएँ। अब एक बाउल में तैयार मिश्रण डालें। ऊपर से फेंटी हुई गाढ़ी क्रीम की तरह लगाएँ। कटे अंगूरों से सजाकर ठंडा करके सर्व करें।

टीबी से डरें नहीं, जॉच और इलाज कराएं

हेल्थ प्लस

क्षय (टीबी) एक सदियों पुराना संक्रामक रोग है। अब तक इस रोग से लाखों लोग असमय मृत्यु को प्राप्त कर चुके हैं। 24 मार्च 1882 को सर राबर्ट काक ने सर्वप्रथम यह पता लगाया कि यह रोग मायको बैक्टेरियम ट्यूबरकुलोसिस नामक बैक्टीरिया से होता है। पहले इसका उपचार लंबा चलता था, लेकिन अब सालभर के अंदर टीबी का जीवाणु हमेशा के लिए खत्म हो जाता है।

सन् 1982 टीबी के जीवाणु की खोज के 100 वर्ष पूर्ण होने पर विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा प्रतिवर्ष 24 मार्च को 'विश्व क्षय दिवस' के रूप में मनाया जाता है। टीबी समाज के सभी उम्र तथा वर्ग के लोगों को प्रभावित करती है। यह बैक्टीरिया इस मामले में पूरा समाजवादी है। गरीब, अमीर सभी को एक रूप से प्रभावित करता है। इस रोग से विश्व की कई महान हस्तियाँ भी प्रभावित हुई हैं। आम धारणा के विपरीत यह खानदानी या पैतृक रोग नहीं है। एक छोटे कमरे में अधिक व्यक्तियों के साथ रहने से निकट के व्यक्तियों में यह रोग फैल जाता है। यह बैक्टीरिया बहुत ही नटखट है। शरीर के सभी अंगों में यह प्रवेश कर उस अंगों को रोग ग्रसित कर देता है। यह प्रमुखत: फेफड़े में ही पाया जाता है। इसके अतिरिक्त, आँतें, मस्तिष्क, हड्डियाँ जोड़, गुर्दे, जननांग, लिम्फनोड, आँखें, चमड़ी, हृदय भी टीबी से ग्रसित हो सकते हैं। महिलाओं में बाँझपन (स्टरलिटी) का प्रमुख कारण जननांगों की टीबी भी-है।

फेफड़ों की टीबी के मुख्य लक्षण हैं : दो सप्ताह या उससे अधिक समय से लगातार खाँसी का आना, खाँसी के साथ बलगम का आना, बुखार- विशेष रूप से शाम को बढ़ने वाला। इसके अलावा वजन का घटना, भूख कम लगना, सीने में दर्द, बलगम के साथ खून आना फेफड़ों की टीबी के लक्षण हैं।

फेफड़ों की टीबी का रोगी जब खाँसता है तो उसके एक बार खाँसने पर लगभग 5000 से अधिक बैक्टीरिया वातावरण में फैल जाते हैं जो स्वस्थ व्यक्तियों के शरीर में श्वास द्वारा प्रवेश कर जाते हैं-जिससे व्यक्ति को टीबी का संक्रमण हो सकता है। अधिकांश व्यक्तियों में यह बैक्टीरिया उसके शरीर में सुप्त अथवा निष्क्रिय अवस्था में जीवनभर रहता है। जब भी ऐसे व्यक्तियों के शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता किसी भी कारण से कम हो जाती है तब यह बैक्टीरिया अपना असर दिखाना शुरू कर देता है और वह व्यक्ति रोग से ग्रसित हो जाता है। भारत की लगभग 40 प्रतिशत जनसंख्या में इसके बैक्टीरिया मौजूद हैं परंतु रोग केवल डेढ़ प्रश आबादी को ही होता है अगर व्यक्ति को मधुमेह (डायबीटीज) अथवा एचआईवी इंफेक्शन है तो टीबी होने की संभावना कई गुना बढ़ जाती है। भारत में प्रतिदिन 4000 से अधिक व्यक्तियों को टीबी होता है और 5000 से अधिक व्यक्ति इस रोग से प्रभावित होते हैं।

भारत में प्रतिदिन एक हजार से अधिक रोगी इस रोग से मर रहे हैं। प्रति डेढ़ मिनट में एक व्यक्ति की मृत्य टीबी से हो रही है। पूरे विश्व में प्रतिवर्ष 18 लाख व्यक्ति इस रोग से मरते हैं, जिनमें से अधिकांश विकासशील देशों से होते हैं। प्रतिवर्ष विश्व में 88 लाख नए मरीज इस रोग से ग्रसित हो रहे हैं। टीबी से सर्वधिक ग्रसित हो रहे हैं। टीबी से सर्वाधिक ग्रस्ति 22 देशों में भारत का सत्रहवॉ स्थान है। यह मुख्यत : 15 से 60 वर्ष की आयु के व्यक्ति में होती है जो कि जीवन का प्रमुख समय है जबकि व्यक्ति स्वयं परिवार एवं राष्ट्र के लिए योगदान देता है। सुखद बात यह है कि टीबी का पूर्णरूपेण इलाज मौजूद है।

शिशु को पैदा होने के तुरंत पश्चात बीसीजी का टीका लगवाने से इस रोग से काफी हद तक बचा जा सकता है। इसको फैलते से रोकने के लिए हर रोगी को पूर्ण एंव नियमित उपचार लेना चाहिए। अधुरा इलाज छोड़ने पर बीमारी भयंकर रूप (एमडीआर टीबी तथा एक्सडीआर टीबी) धारण कर लेती है जिसका पूर्ण उपचार संभव नहीं है।

नमक की सचाई

आमतौर पर नमक को बहुत हल्के में लिया जाता है जबकि स्वास्थाय के लिए यह महत्वपूर्ण घटक है। देश में न केवल शहरी अपितु ग्रमिण क्षेत्रों में भी हमारे भोजन में नमक की मात्रा अत्यधिक होती हैं। हमारे देश के लोग आदतन ज्यादा नमक खाते हैं। दूसरे युवावर्ग फास्टफूड का शौकीन है जिसमें नमक बहुतायत से होता है।

चिंता यह है कि हमारा युवा वर्ग लुभावने विज्ञापनों के कारण पैकेट बंद खाद्य पदार्थों का उपयोग बहुतायत में कर रहे हैं जिसमें न केवल नमक की मात्रा अधिक होती है बल्कि सैचुरेटेड फैट और शकर की मात्रा भी बहुत होती है जिसके कारण यह वर्ग मोटापा, डायबिटीज, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग आदि नाना प्रकार के रोगों से ग्रस्त होता जा रहा है।

भोजन में नमक की बढ़ती मात्रा और हाई ब्लड प्रेशर के बीच सीधा संबंध है जिसकी अधिकता के कारण पक्षाघात और दिल की बीमारियों की चपेट में फँसते जा रहे हैं। पक्षाघात के 60-65 प्रतिशत तथा दिल की 50 प्रतिशत बीमारियों का एकमात्र कारण हाई ब्लड प्रेशर है।

चिकित्सकों के मुताबिक रोजाना के भोजन में नमक की मात्रा अधिकतम 5 ग्राम होना चाहिए, लेकिन हम 10 ग्राम और उससे भी अधिक नमक का उपयोग कर रहे हैं। विश्व के कई देशों ने डिब्बा बंद खाद्य पदार्थों में नमक की मात्रा घटाना जरूरी कर दिया है जिसके कारण वहाँ पक्षाघात और हृदय रोगों में कमी हुई है। यह निर्विवाद सत्य है कि शरीर को अल्पमात्र में नमक की आवश्यकता होती है। हमारे भोजन में प्राकृतिक रूप से (पत्तेदार, हरी सब्जियों, सलाद व फलों में) नमक की मात्रा कुछ हद तक मौजूद रहती है। इसलिए अतिरिक्त नमक की आवश्यकता नहीं रहती। भारत जैसे विकासशील देश के लोग स्वस्थ जीवन शैली और दैनिक खानपान की अपनी आदतों में थोड़ा परिवर्तन कर इन बीमारियों और महँगें उपचारों से बच सकते हैं। अपने आहार में नमक की मात्रा में कटौती के साथ-साथ हाई कैलोरी व सैचुरटेड फैट और शकर की मात्रा भी घटाएँ। भोजन को अधिक संतुलित व प्राकृतिक रूप में खाएँ।

स्तन कैंसर सैल्स पर प्रभाव डालती है ब्रोकोली

बर्कले में यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया के विशेषज्ञ अध्ययन कर रहे हैं स्तन कैंसर सैल्स पर ब्रोकोली के प्रभाव का। अभी तक उन्होंने अपने अध्ययन से निष्कर्ष निकाला है कि ब्रोकोली में इनडोल्स नामक यौगिक पाए जाते हैं और पाच्न प्रक्रिया में यह 3-3 डिडोलिलमेथेन नामक यौगिक बनाते हैं जो पेट में डी.आई.एम. नामक रसायन उत्पन्न करता है। यह रसायन कैंस्र की संभावना को कम कैंसर सैल्स को फैलने से रोकता हैं।